हिंदी दिवस विशेषांक

राजभाषा रश्मि

अप्रैल - सितंबर, 2023









भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
वस्त्र मंत्रालय

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

A Mini Ratna Company
(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING)
MINISTRY OF TEXTILES

राजभाषा रश्मि

संरक्षक



श्री ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक मंडल



श्री विजय कुरडगि
निदेशक (विपणन)



श्री एस. के. पाणिग्राही
मुख्य महा प्रबंधक (विपणन)



श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/प्रशासन/राजभाषा)



श्री तिलक राज तनेजा
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त)

राजभाषा रश्मि

अप्रैल - सितंबर 2023

अनुक्रमणिका

1. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 01
2. संपादकीय 02
3. संदेश (माननीय गृह मंत्री) 03
5. संदेश (माननीय वस्त्र मंत्री) 05
6. संदेश (माननीय रेल एवं वस्त्र राज्य मंत्री) 06
7. संदेश (माननीय सचिव) 07
8. संयुक्त जयंती 08
9. हिंदी दिवस कार्यक्रम 09
9. नराकास पुरस्कार की झलकियां 18
10. राजभाषायी निरीक्षण 20
11. राम भक्ति हिंदी काव्य धारा 23
12. फ़लसफा जिन्दगी का 31
13. गौरैया 32
14. विश्राम भी जरुरी है 33
15. हिंदी नवजागरण और भारतेंदु 34
16. बचपन 37
17. पांचवा कांधा 39
18. सेवानिवृत्ति 50
19. श्रद्धांजलि 51
20. राष्ट्रीय एकता तथा विश्व बंधुत्व का संदेश वाहक 52

रचना के तथ्यों का दायित्व स्वयं रचनाकार का है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से ....



निगम की छः माही हिंदी पत्रिका राजभाषा रश्मि आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

भाषा ही विचारों, भावनाओं एवं विविध मनोदशाओं की शाब्दिक अभिव्यक्ति का नाम है। भाषा, विचारों की सहज एवं सार्थक संवाहक है। राजभाषा जितनी सहज सरल एवं प्रयोजनमूलक होगी, उतनी उसकी उपयोगिता अधिक बढ़ेगी। भारत की राजभाषा हिंदी है एवं इसका विकास हमारी नैतिक एवं संवैधानिक जिम्मेदारी है। हिंदी पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन इसका रचनात्मक पहलू है जिससे कर्मियों के लिए एक मंच की निर्मिती होती है।

भाषा के माध्यम से हम अपने विचार, कल्पना व चिंतन को एक-दूसरे तक पहुंचाते है। अपने संस्कार, सभ्यता, संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए एक ऐसी माध्यम की आवश्यकता है जो सरल, सुबोध होने के साथ – साथ अमृत के समान मधुर मीठी हो। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें उपरोक्त सभी गुण विद्यमान है। भारत की संस्कृति, नैतिकता तथा दर्शन को समझने के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक है। भारत के सर्वाधिक लोगों के द्वारा हिंदी आसानी से बोली व समझी जाती है । संसार की भाषाओं में हिंदी का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। सरलता, संवेदन, शीलता, शक्ति और उदारता की दृष्टि से हिंदी को विश्व के विचारकों ने प्रथम स्थान पर रखा है। यह हिंदी सर्वसहिष्णुता, क्षमाशीलता, श्रमशीलता तथा जीवित स्पंदन व अहिंसक भाषा रही हैं ।

भाषा की इसी महत्ता को प्रतिपादित करते हुए आचार्य दंडी ने कहा था कि " यह सृष्टि अंधकार में डूब गई होती यदि भाषा रूपी प्रकाश का अभ्युदय न हुआ होता ।"

शुभकामनाओं सहित

ललित गुप्ता

ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादकीय



राजभाषा रश्मि के इस अंक के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद स्थापित करने में मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित सरकारी नीतियों के प्रति हम सभी का दायित्व है कि हम अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। हिंदी हमारी राजभाषा के साथ –साथ राष्ट्रीय एकता की भाषा है। साथ ही देश की संपर्क भाषा और जनभाषा भी है। हमारी संस्कृति की संवाहिका है। इन सभी गुणों के कारण हिंदी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हुई है। हमें इसे विशेष महत्व देना ही चाहिए। हिंदी के सम्मुख अनेक चुनौतियां भी हैं लेकिन सुदृढ़ संकल्प शक्ति और कार्य के प्रति अटूट समर्पण से चुनौतियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। भारत सरकार के जो लक्ष्य निर्धारित किये हैं, उन लक्ष्यों के अनुरूप हमें अपना कार्य करना होगा। इन लक्ष्यों को प्राप्त करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। हम, जो हिंदी बोलते है, उसी प्रकार की हिंदी लिखनी है। हम, जैसे बोलते हैं उसे वैसे ही लिख दें। यही हिंदी की विशेषता है। प्रयास करने से ही हम हिंदी को आगे बढ़ाने में सफल होंगे।

मैं चाहूंगा कि आप सभी अपने दैनिक सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे संविधान की अपेक्षाओं के अनुरूप राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में सरकारी दस्तावेजों पर हिंदी को बढ़ावा मिल सके एवं हम सभी निर्धारित लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकें।

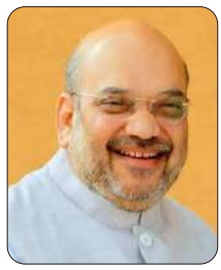
पत्रिका के बारें में अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवश्य अवगत करायें, ताकि राजभाषा रश्मि के आगामी अंको में और अधिक निखार लाया जा सके।

शुभकामनाओं सहित

राजेन्द्र कुमार गुप्ता
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/राजभाषा)

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियों!
आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है ।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गाँधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृ भाषाएँ हिंदी नहीं थीं ।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति कौ मूल।'** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया ।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि विद्यापति की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद समान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं

को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है । फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं...

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

पीयूष गोयल
PIYUSH GOYAL

सत्यमेव जयते

वाणिज्य एवं उद्योग,उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा वस्त्र मंत्री,
भारत सरकार
MINISTER OF COMMERCE &
INDUSTRY, CONSUMER AFFAIRS,
FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION AND
TEXTILES, GOVERNMENT OF INDIA



संदेश

भाषा किसी देश की सभ्यता, संस्कृति, परंपरा और रीति-रिवाज़ की परिचायक होती है। भाषा परस्पर संवाद के माध्यम से एक दूसरे को जोड़े रखने का काम करती है। हिंदी में ये सारी खूबियां होने के कारण स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश के तमाम नागरिकों को एकजुट करने, उनके साथ रणनीतिक संवाद स्थापित करने के लिए देश की लोकप्रिय भाषा हिंदी को माध्यम बनाकर आज़ादी हासिल की गई थी। देश में बड़े पैमाने पर हिंदी की स्वीकार्यता को देखते हुए हमारे संविधान में 14 सितंबर के ही दिन हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था।

माननीय प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व में आज भारत प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहा है और आज़ादी के अमृतकाल में एक विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है। माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों से हिंदी में संबोधन करने से देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हिंदी का मान-सम्मान बढ़ा है।

हिंदी की सरलता और सहजता के कारण अनेक प्रसिद्ध विद्वानों ने हिन्दी को स्वीकार किया है। सरकारी काम-काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना हमारा दायित्व है ताकि शासन और जनता के बीच बेहतर समझ पैदा हो सके। "अपनी भाषा में काम, देश की प्रगति में योगदान" के मूल मंत्र को ध्यान में रखते हुए कार्यालयों में हमें हिंदी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

हिंदी दिवस के अवसर पर मैं वस्त्र मंत्रालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएं देता हूँ और उन्हें अधिक से अधिक सरकारी काम-काज हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।

पीयूष गोयल

(पीयूष गोयल)

दर्शना जरदोश
DARSHANA JARDOSH

सत्यमेव जयते

रेल एवं वस्त्र राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
RAILWAYS AND TEXTILES
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

हमारा देश विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों वाला देश है जिनमें से हिंदी सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली एक लोकप्रिय भाषा है। हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसीलिए देश की आज़ादी के बाद जब देश का कामकाज चलाने के लिए एक राजभाषा की आवश्यकता महसूस हुई तो हिंदी का नाम सर्वोपरि था। इसी के मद्देनजर संविधान निर्माताओं द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था। तभी से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

वस्त्र मंत्रालय का कामकाज नि:सन्देह वस्त्र क्षेत्र से संबंधित है और वस्त्र क्षेत्र का दायरा बहुत व्यापक है। इस क्षेत्र में देश के छोटे तथा बड़े हर वर्ग के लोग जुड़े हैं जिनमें से अधिकांश आम नागरिक हैं। देश की अर्थव्यवस्था में भी वस्त्र क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान है। माननीय प्रधानमंत्री जी के मेक इन इंडिया पहल के कार्यान्वयन के फलस्वरूप वस्त्र आइटमों के उत्पादन, उनकी गुणवत्ता तथा निर्यात में वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने और इस क्षेत्र को बड़ा आकार देने के लिए सरकार द्वारा बहुत सी योजनाएं जैसे- एसआईटीपी, जूट-आई केयर, एनटीटीएम, एनएचडीपी, सीएचसीडीएस, एनएचडीपी, आरएमएमएस, एटीयूएफएस क्रियान्वित की जा रही हैं, जिनमें हाल में मंजूर की गई पीएम मित्र योजना प्रमुख है। इन योजनाओं का व्यापक प्रचार करने, इनके लाभों के बारे में जागरूकता लाने और इनका लाभ देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए हमें सरकारी कामकाज देश की सबसे लोकप्रिय भाषा हिंदी में करना होगा।

हिंदी दिवस के अवसर पर मंत्रालय तथा इसके नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों में अपनी सुविधानुसार हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी माह आदि का आयोजन किया जाएगा। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इस दौरान हिंदी की बहुत सी प्रतियोगिताएं / संगोष्ठी आदि आयोजित की जाएंगी। आप सबसे मेरी अपेक्षा है कि इन आयोजनों में अपनी प्रतिभागिता से प्रोत्साहित होकर अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करें।

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितंबर, 2023

दर्शना जरदोश.

(दर्शना ज़रदोश)

रचना शाह, भा.प्र.से.
सचिव
Rachna Shah, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वस्त्र मंत्रालय
उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF TEXTILES
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI-110011



संदेश

भाषा समाज और देश के लिए न केवल संवाद का माध्यम होती है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैश्वीकरण के दौर में हिंदी ने वैश्विक परिदृश्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया था और इसकी स्मृति को बनाए रखने के लिए हर वर्ष **हिंदी दिवस** मनाया जाता है।

वर्तमान में जब हम आत्मनिर्भर भारत और 'मेक इन इंडिया' की बात करते हैं तो इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सबसे पहले हमें भाषायी आधार पर आत्मनिर्भर बनना होगा। वस्त्र क्षेत्र बहुत ही व्यापक क्षेत्र है। इस क्षेत्र को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने तथा इस क्षेत्र से जुड़े कर्मियों तथा उद्योग जगत को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं चलायी जा रही हैं। जन मानस को सरकार की इन विभिन्न योजनाओं और सुविधाओं का समुचित ज्ञान और लाभ केवल सबकी भाषा अर्थात हिंदी के माध्यम से ही प्रदान कर सकते हैं। अतः हम सबका कर्तव्य है कि कार्यालय में अधिकाधिक काम राजभाषा हिंदी में करें।

हिंदी दिवस के अवसर पर मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा/हिंदी माह के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए कार्यालयीन कार्य से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का **14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2023** के दौरान आयोजन किया जाएगा। मैं आप सभी से आग्रह करती हूँ कि आप इन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लें तथा राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन करते हुए अधिकाधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करके अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करें और देश का गौरव बढ़ाएं।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

14 सितंबर, 2023

रचना शाह

(रचना शाह)

मुख्यालय में छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिराव फुले और भारतरत्न डॉ. बाबासाहब भीमराव आंबेडकर की संयुक्त जयंती का समारोह

दिनांक 04 मई 2023 को निगम के मुख्यालय में श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल, (संधारणीयता) तथा श्री हेमंत कुमार पटेल, मुख्य सतर्कता अधिकारी की उपस्थिति में भाकनि कर्मचारी संघ एवं भाकनि अनु. जाति/अनु. जनजाति/ओबीसी कर्मचारी कल्याण संघ द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा ज्योतिराव फुले और भारतरत्न डॉ. बाबासाहब भीमराव आंबेडकर की संयुक्त जयंती समारोह मनाया गया. जिसमें निगम के सभी अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण द्वारा तीनों महानुभावों को पुष्प अर्पण किया गया ।



(निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा पुष्प अर्पित करते हुए)



(समारोह में उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण और कर्मचारीगण)

हिंदी दिवस कार्यक्रम - 2023

मुख्यालय

निगम के मुख्यालय में दिनांक 14.09.2023 से दिनांक 28.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु एवं निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ-चढ़ के भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 23 अक्टूबर, 2023 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, वस्त्र मंत्री, वस्त्र राज्य मंत्री एवं सचिव (वस्त्र), भारत सरकार के प्रेरणादायी संदेशों का पठन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य महा प्रबंधक
(वित्त/राजभाषा) द्वारा संदेश पढ़ते हुए)



(अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा प्रतिभागियों को
पुरस्कार प्रदान करते हुए)

शाखा कार्यालय : सिरसा

शाखा कार्यालय सिरसा में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री ब्रिजेश कसाना, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती मोनिका लहर, प्रबंधक राजभाषा को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(शाखा प्रबंधक द्वारा कार्यक्रम का संचालन करते हुए)



(श्री ब्रिजेश कसाना, शाखा प्रबंधक द्वारा मुख्य अतिथि को सम्मानित करते हुए)

शाखा कार्यालय : श्रीगंगानगर

शाखा कार्यालय श्रीगंगानगर में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री मोहित शर्मा, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए)



(श्री मोहित शर्मा, महा प्रबंधक एवं अधिकारीगण)

शाखा कार्यालय : भीलवाड़ा

शाखा कार्यालय भीलवाड़ा में दिनांक 16.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री प्रदीप महरा, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री बी. एल. आर्य, सहायक प्राचार्य, हिंदी विभाग, माणिक्यलाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(मुख्य अतिथि एवं अन्य अधिकारी गण)

शाखा कार्यालय : इंदौर

शाखा कार्यालय इंदौर में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री अभिजीत शर्मा, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी साहित्य क्षेत्र के जाने माने व्यक्तित्व श्री संतोष मोहंती 'दीप' को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी दिवस के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण)



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए
श्री अभिजीत शर्मा, शाखा प्रबंधक)

शाखा कार्यालय : अकोला

शाखा कार्यालय अकोला में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। श्री नीरज कुमार, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. निशाली सत्यनारायण पंचगाम, आकाशवाणी अकोला को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मंच पर मुख्य अतिथि, शाखा प्रबंधक एवं अधिकारीगण)



(मुख्य अतिथि समारोह मे उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण को संबोधित करते हुए)

शाखा कार्यालय : औरंगाबाद

शाखा कार्यालय औरंगाबाद में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस का समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को पी. अमरनाथ रेड्डी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ सुलक्षणा जाधव, प्रोफेसर (हिन्दी अनुभाग) एवं कैप्टन, एन सी सी विभाग, देवगिरी महा विद्यालय, औरंगाबाद को आमंत्रित किया गया तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्री अमरनाथ रेड्डी, महा प्रबंधक)



(हिंदी दिवस समारोह में भाग लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालय : अहमदाबाद

शाखा कार्यालय अहमदाबाद में दिनांक 18.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। श्री के. महेश्वर रेड्डी, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. ऋषिपाल धिमान, अध्यक्ष, "साहित्यलोक" अहमदाबाद को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(समारोह को संबोधित करते हुए श्री के.महेश्वर रेड्डी, शाखा प्रबंधक)


(हिंदी दिवस समारोह में भाग लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालय : राजकोट

शाखा कार्यालय राजकोट में दिनांक 14.09.2023 से 28.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री पी. बी. सिंह को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(मुख्य अतिथि श्री पी. बी. सिंह का स्वागत करते हुए सहायक प्रबंधक (विपणन)

शाखा कार्यालय : भटिंडा

शाखा कार्यालय भटिंडा में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई । समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री विनोद कुमार, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती स्नेह लता, हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त) केंद्रीय विद्यालय संगठन, भटिंडा को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(हिंदी दिवस के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण)



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्री विनोद कुमार, महा प्रबंधक)

शाखा कार्यालय : हुबली

शाखा कार्यालय हुबली में दिनांक 14.09.2023 से 22.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई । समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को शिखा झांब, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री शीतल एम., मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) भारतीय स्टेट बैंक, हुबली को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(मुख्य अतिथि द्वारा प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करती हुए)



(हिंदी दिवस समारोह में उपस्तिथ सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालय : गुंटूर

शाखा कार्यालय गुंटूर में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री स्वप्निल वि. दडमल, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती नागवल्ली सौजन्य पारुचुरी, हिंदी अध्यापिका, गुंटूर को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विोता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती नागवल्ली सौजन्य पारुचुरी)



(मुख्य अतिथि को सम्मानित करते हुए स्वप्निल दडमल, शाखा प्रबंधक)

शाखा कार्यालय : आदिलाबाद

शाखा कार्यालय आदिलाबाद में दिनांक 22.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री आद्या मिश्र, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री राहुल अनुराग, सहायक महा प्रबंधक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र अदिलाबाद को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्री आद्या प्रसाद मिश्र, शाखा प्रबंधक)



(मुख्य अतिथि समारोह का संबाधित करते हुए)

शाखा कार्यालय : वारंगल

शाखा कार्यालय वारंगल में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री सचिन शिंदे, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. डी अनंतलक्ष्मी, पिंगल सरकारी महाविद्यालय फॉर वुमेन, वड्डेपली को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए
श्री सचिन शिंदे, सहायक महा प्रबंधक)



(समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालय : महबूबनगर

शाखा कार्यालय महबूबनगर में दिनांक 22.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई। समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री आर. जेयकुमार, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. के नरासिम्हा राव, सहायक प्राचार्य, डॉ. बी. आर. आर. शासकीय महाविद्यालय, जडचेरला को आमंत्रित किया गया था तथा कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



(हिंदी दिवस के अवसर पर श्री आर. जेय कुमार,
शाखा प्रधान एवं मुख्य अतिथि)



(हिंदी दिवस समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण)

शाखा कार्यालय : रायगढ़ा

शाखा कार्यालय रायगढ़ा में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई । समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री टी .के. दास, उप महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. भगवान बिस्वाल रायगढ़ा को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(मुख्य अतिथि समारोह मे उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी गण को संबोधित करते हुए)

शाखा कार्यालय : कोयम्बतूर

शाखा कार्यालय कोयम्बतूर में दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गई । समापन समारोह दिनांक 29.09.2023 को श्री नीरज कुमार भट्ट, सहायक महा प्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।



(हिंदी दिवस के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण)



(समारोह को संबोधित करते हुए
श्री नीरज कुमार भट्ट, शाखा प्रबंधक)

नराकास पुरस्कार की झलकियां

अकोला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु संबंधित नराकास द्वारा दिनांक 09.06.2023 को शाखा कार्यालय अकोला को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।



(नराकास प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए शाखा प्रबंधक श्री नीरज कुमार)

अहमदाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु संबंधित नराकास द्वारा शाखा कार्यालय अहमदाबाद को दिनांक 27.07.2023 को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।



(नराकास शील्ड ग्रहण करते हुए शाखा प्रबंधक
श्री के. महेश्वर रेड्डी)



(प्रमाण-पत्र ग्रहण करती हुई
व. सहायक हिंदी श्रीमती चैताली ओझा)

औरंगाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु संबंधित नराकास द्वारा शाखा कार्यालय औरंगाबाद को दिनांक 10.08.2023 को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।



(राजभाषा शील्ड ग्रहण करते हुए महा प्रबंधक श्री अमरनाथ रेड्डी)

सिरसा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु संबंधित नराकास द्वारा शाखा कार्यालय सिरसा को दिनांक 23.08.2023 को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।



(नराकास शील्ड ग्रहण करते हुए शाखा प्रबंधक श्री ब्रिजेश कसाना, सिरसा)

सभी पुरस्कृत शाखा कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाई

राजभाषायी निरीक्षण

भीलवाड़ा

शाखा कार्यालय भीलवाड़ा में हिंदी कार्य का निरीक्षण दिनांक 27.06.2023 को श्री विजय कुराडगी, निदेशक (विपणन) महोदय द्वारा किया गया । शाखा का हिंदी कार्य अच्छा रहा ।



(हिंदी कार्य का निरीक्षण करते हुए निदेशक (विपणन) साथ में महा प्रबंधक तथा हिंदी सहायक)

औरंगाबाद

शाखा कार्यालय औरंगाबाद के हिंदी कार्य का निरीक्षण दिनांक 07.07.2023 को श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा किया गया । राजभाषा निरीक्षण के दौरान शाखा का कार्य काफी सराहनीय पाया गया।



(हिंदी कार्य का निरीक्षण करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय तथा साथ में महा प्रबंधक)

श्रीगंगानगर

शाखा कार्यालय श्रीगंगानगर में हिंदी कार्य का निरीक्षण दिनांक 02.08.2023 को श्री राजेंद्र कुमार गुप्ता, मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/ राजभाषा) द्वारा किया गया। राजभाषा निरीक्षण के दौरान शाखा का हिन्दी कार्य संतोषजनक पाया गया।



(हिंदी कार्य का निरीक्षण करते हुए मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/राजभाषा) तथा साथ में महा प्रबंधक)

अहमदाबाद

शाखा कार्यालय अहमदाबाद में हिंदी कार्य का निरीक्षण दिनांक 04.08.2023 को श्री हेमंत कुमार पटेल, मुख्य सर्तकता अधिकारी महोदय द्वारा किया गया । राजभाषा निरीक्षण के दौरान शाखा का हिन्दी कार्य सराहनीय पाया गया।



(हिंदी कार्य का निरीक्षण करते हुए मुख्य सर्तकता अधिकारी एवं शाखा प्रबंधक)

सिरसा

शाखा कार्यालय सिरसा में हिंदी कार्य का निरीक्षण दिनांक 05.09.2023 को श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा किया गया। राजभाषा निरीक्षण के दौरान शाखा का हिन्दी कार्य उत्कृष्ट पाया गया ।



(राजभाषायी निरीक्षण करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय तथा साथ में शाखा प्रबंधक एवं राजभाषा सहायक)

रायगढ़ा

शाखा कार्यालय रायगढ़ा में हिंदी कार्य का निरीक्षण दिनांक 13.04.2023 को श्री तिलक राज तनेजा, मुख्य महा प्रबंधक (वित्त) और दिनांक 26.04.2023 को श्री राजेंद्र कुमार गुप्ता, मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/राजभाषा) के द्वारा किया गया। राजभाषा निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी का कार्य काफी संतोषजनक पाया गया ।



राम भक्ति हिंदी काव्य धारा

ईश्वर के प्रति आसक्ति, उसकी स्मृति, निष्काम भावनात्मक लगाव, समर्पण भाव, आंतरिक श्रद्धा और सच्चा प्रेम भक्ति कहलाता है। इसमें भक्त अपने आराध्य से आवेगपूर्ण प्रेम और श्रद्धा भाव रखते हुए उसकी समीपता चाहता है। डॉ. रामस्वार्थ चौधरी के अनुसार- **"भक्ति श्रद्धा, विश्वास एवं प्रेमपूरित भक्त हृदय का वह मधुर मनोराग है जिसके द्वारा भक्त और भगवान, उपास्य और उपासक के पारस्परिक संबंध का निर्धारण होता है। यह भक्त के विमल मानस से निःसृत दिव्य प्रेम की वह उज्ज्वल भाव धारा है जिसके प्रवाह में बहकर लौकिक प्रेम का विषयानंद अपने समस्त कलुषों का परिहार कर अलौकिक प्रेम के ब्रह्मानंद में परिणत हो जाता है।"** हमारे जीवन में ईश्वर भक्ति का विशेष महत्व है, क्योंकि इससे शक्ति मिलती है और कुरीतियों, कुसंस्कारों, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि से मुक्ति मिलती है। हृदय शुद्ध और पवित्र होता है, सुख-चैन मिलता है और समाज में शांति बनी रहती है।

उपासक या भक्त की दृष्टि से भक्ति के तीन रूप होते हैं – श्रद्धा भक्ति, भावना भक्ति और शुद्धा भक्ति। अपने-अपने उपास्य के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखकर की जाने वाली भक्ति श्रद्धा भक्ति कहलाती है। एक में अनेक और अनेक में एक को देखते हुए भक्ति में एकांत की भावना को भावना भक्ति कहते हैं। अपने आराध्य देव को निर्गुण-सगुण तथा अवतार रूप में स्वीकार कर उसके प्रति अविरल प्रेम प्रदर्शित करना शुद्धा भक्ति कहलाता है।

भक्ति की नौ विधाए हैं- श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चना, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन। मन की शांति और सुख प्राप्ति के लिए भक्ति के चलन के आधार पर हिंदी भक्ति काव्य की दो धाराएं हैं– 1. निर्गुण काव्य धारा – इसके अंतर्गत उस ईश्वर की भक्ति की गई है जो सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है तथा समस्त गुणों से ऊपर है। वह निराकार, अक्षय, अजन्मा, अगोचर है तथा सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। इसकी दो शाखाए हैं- (क) संत काव्य धारा या ज्ञानमार्गी शाखा (ख) सूफी काव्य धारा या प्रेममार्गी शाखा। 2. सगुण काव्य धारा – इसके अंतर्गत वैष्णव भक्ति धारा प्रवाहित हुई है। सगुण काव्यधारा के भी 2 भाग हैं- (क) कृष्ण काव्यधारा (ख) राम काव्य धारा। इसमें भगवान विष्णु के क्रमशः कृष्ण और राम रूप अवतारों की महिमा का वर्णन है।

राम भक्ति हिंदी काव्य धारा

भारतीय साहित्य शताब्दियों से नैतिक, आध्यात्मिक आदर्शों-मूल्यों को लेकर राममय रहा है। प्रबंध काव्यों, उद्देश्य प्रधान नाटकों एवं भाव संकलित गीतकाव्यों में रामकथा का उल्लेख है। भारतीय भाषाओं में राम काव्य की परंपरा बहुत विशाल रही है। अपभ्रंश, पालि, प्राकृत एवं संस्कृत में राम काव्य धारा के सूत्र मिलते हैं। भगवान राम की उपासना वैदिक युग में भी की जाती थी। 4थी सदी में रामकथा

आख्यान काव्य परंपरा मिलती है। रामकथा का सर्वप्रथम बृहत् काव्य गुण संपन्न, सुगठित और क्रमबद्ध रूप वाल्मीकि रामायण ग्रंथ माना जाता है। यह आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में रचित महाकाव्य है। इसमें राम के चरित्र का उत्तम एवं बृहद विवरण काव्य रूप में है।

भक्ति के विकास क्रम में राम भक्ति 10वीं सदी में दक्षिण के आलवार संतों की वाणी के माध्यम से प्रस्फुटित हुई उसके बाद उत्तरी भारत में विकसित हुई। उत्तरी भारत में राम भक्ति का प्रवर्तन आचार्य रामानुज की परंपरा में राघवानंद द्वारा प्रारंभ हुआ। उनके शिष्य रामानंद ने उसे युगानुकूल भावभूमि प्रदान की। राम भक्ति काव्य के विकास में इनका योगदान महत्वपूर्ण रहा। 12वीं सदी के अंत में भूपति ने दोहों और चौपाइयों में राम भक्ति का वर्णन किया था। आदिकाल में चंदबरदाई द्वारा हिंदी भाषा में लिखे गए महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' (आदिकाल अर्थात् 650 ई. से 1350 ई. के बीच रचित) के मंगलाचरण में विष्णु के दशावतारों के अंतर्गत राम कथा का संक्षेप में वर्णन हुआ है।

13वीं से 17वीं शताब्दी में हिंदी साहित्य में राम भक्ति काव्य धारा पूर्ण रूप से पल्लवित, प्रचलित व विकसित होने के प्रमाण मिलते हैं। वह काल भारी राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक उथल-पुथल का काल था। पठान शासकों से सत्ता मुगल शासकों को हस्तांतरित हुई थी। निरंतर होने वाले विदेशी आक्रमणों ने लोक जीवन को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से झकझोर कर रख डाला था। शासन को जनता की सुख-सुविधाओं से कोई सरोकार न था। अन्याय और अत्याचारों के बोझ तले दबी जनता सत्ता की गतिविधियों के विरुद्ध थी। उसके सामने ही उसकी देव मूर्तियाँ तोड़ी जातीं और मंदिर ढहाए जाते। पूज्य पुरुषों का अपमान होता। ऐसे में जनता अपने पौरुष से हताश व निराश हो मानसिक रूप से टूट चुकी थी। उसके हृदय में उत्साह, गर्व और गौरव नहीं रह गया था। एकमात्र भक्ति ही उसका सहारा थी जिस पर उसका अधिकार था, जिसे ज्ञान और योग के बिना ही, मात्र भावात्मक अनुभूति के बल पर प्राप्त किया जा सकता था। ऐसे में अपने आराध्य की उपासना की ओर उन्मुखता स्वाभाविक थी। राम भक्त कवियों ने काल, परिस्थिति और समय के अनुरूप काव्य सृजन किया, जिसका साध्य राम भक्ति और साधन काव्य था। राम भक्त कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से एक ओर जहाँ धर्म रक्षा, लोक हित तथा समाज के उत्थान में योगदान दिया, वहीं दूसरी ओर काव्य को उत्कृष्ट, उदात्त एवं लोक मंगलकारी रूप प्रदान करने का स्तुत्य कार्य किया।

राम भक्ति हिंदी काव्य धारा के कवि

राम भक्त कवियों ने भगवान श्रीराम के जीवन चरित्र को आधार बनाकर लेखन कार्य किया। इन कवियों ने अपनी रचनाओं के आधार पर समाज को आदर्श मूल्यों, स्वस्थ गुणों, सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा देने का प्रयत्न किया। राम भक्ति शाखा के मुख्य कवि निम्न प्रकार हैं-

1. आचार्य स्वामी रामानंद

उत्तरी भारत में राम भक्ति काव्यधारा का विस्तृत और वास्तविक प्रारंभ 12वीं सदी में रामानंद से माना जाता है। सर्वप्रथम उन्होंने ही रूढ़ियों में आबद्ध और बाह्य आक्रमणों से संत्रस्त समसामयिक हिंदू

समाज को जाति और वर्ग के भेदभाव से ऊपर उठकर भक्ति भावना की ओर अग्रसर किया। धनुष-बाण धारी राम के लोकरक्षक रूप की उपासना प्रारंभ कर उन्होंने एक ओर हिंदू समाज की पराजित मनोवृत्ति को जाग्रत किया। दूसरी ओर, बलपूर्वक मुसलमान बनाए गए हिंदुओं को पुनः हिंदु धर्म में दीक्षित करने की नयी व्यवस्था स्थापित की।

रामानुजाचार्य के भक्ति सिद्धांतों से प्रभावित रामानंद ने समस्त देश में भ्रमण कर राम भक्ति का प्रचार किया। शील, शक्ति और सौंदर्य से युक्त राम के गंभीर, मर्यादापूर्ण और दिव्य गुणों से परिपूर्ण जीवन को प्रस्तुत कर जनता के सामने एक आदर्श चित्र प्रस्तुत किया। नवीन शक्ति प्रदान की। यह विश्वास जगाया कि कष्टमयी स्थिति से परमात्मा अवश्य रक्षा करेंगे। संस्कृत के पंडित रामानंद ने संस्कृत में 'श्रीरामार्चन' ग्रंथ की भी रचना की। राम भक्ति परंपरा के चिंतन का मेरुदंड कहलाने वाले रामानंद ने लोक जागरण और लोक कल्याण के लिए परंपरागत संस्कृत भाषा में काव्य रचना के स्थान पर लोक भाषा में काव्य सृजन के लिए प्रेरित किया। इनके द्वारा रचित 'रामरक्षा स्त्रोत' तथा हनुमान की स्तुति का हिंदी पद 'आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की' आज भी प्रसिद्ध है। असाधारण व्यक्तित्व के धनी रामानंद ने भक्ति के क्षेत्र में वर्ण-व्यवस्था को व्यर्थ बताया और भक्ति को सभी प्रकार की संकीर्णताओं से दूर कर ऊँच-नीच का भेद तोड़ा। उन्होंने सभी जातियों के व्यक्तियों को अपना शिष्य बनाया। राम के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों की उपासना का विधान किया। रामानंद की विचारधारा से प्रभावित उनके शिष्य गोस्वामी तुलसीदास ने 16वीं सदी में 'रामचरित मानस' नामक सुप्रसिद्ध ग्रंथ की रचना कर राम भक्ति का प्रचार किया।

2.स्वामी अग्रदास

राम भक्त कवियों में नाभादास के गुरु और कृष्णदास पयहारी के शिष्य, तुलसीदास के समकालीन कवि स्वामी अग्रदास का महत्वपूर्ण स्थान है। राम भक्ति काव्य परंपरा में माधुर्य भावना का समावेश सर्वप्रथम अग्रदास ने ही किया था। उन्होंने स्वयं को अग्रअली (जानकी की सखी) मानकर सखी भावना से राम की भक्ति की। 'राम ध्यान मंजरी' (रसिकोपासना का सिद्धांत ग्रंथ), 'अष्टयाम' (श्रीराम के ऐश्वर्य रूप की भव्य झांकी) और 'कुंडलियाँ रामायण' (नीति और उपदेश से संबंधित छंद) नामक संक्षिप्त काव्य कृतियों की रचना की, जो राम के प्रति उनकी सहज भक्ति भावना का प्रतीक हैं। **डॉ. बच्चन सिंह** के अनुसार- **'अग्रदास स्वामी रामानंद के शिष्य-परंपरा के चौथी पीढ़ी में हुए – रामानंद, अनंतानंद, श्रीकृष्णदास पयहारी और अग्रदास। वे पयहारी के शिष्य थे। पयहारी गलता गद्दी के स्वामी थे। उनके अवसान के बाद उन्होंने जयपुर के पास रैवासा में अपनी अलग गद्दी स्थापित कर ली और रसिकोपासना के प्रचार में लग गए। युगल प्रियाजी उन्हें सीता की प्रिय सखी चंद्रकला का अवतार कहते हैं।'**

3. नाभादास

स्वामी अग्रदास के शिष्य एवं गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन नाभादास (मूल नाम नारायण दास) ने 'रामाष्टयाम', 'रामचरित संग्रह', 'भक्तिमाल' नामक अपनी रचनाओं के माध्यम से राम काव्य की परंपरा में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। अपने गुरु अग्रदास की रचना 'अग्रअली' से प्रभावित नाभादास ने, उन्हीं के अनुसरण में, 'रामाष्टयाम' की माधुर्य भावना से युक्त रचना की, जिसमें राम के ऐश्वर्य रूप की भव्य झांकी मिलती है। नाभादास की रचना ब्रजभाषा गद्य में है।

4. विष्णुदास

राम भक्ति काव्य परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास माने जाते हैं, तथापि हिंदी में सर्वप्रथम रामकथा लिखने का श्रेय विष्णुदास को प्राप्त है। विष्णुदास ने 'रामायण कथा' (1442) नामक ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर लिखा है।

5. ईश्वरदास

ईश्वरदास ऐसे राम भक्त कवि हैं जो सूफी हैं। रामकथा विषयक इनकी दो काव्य रचनाएं हैं- 1. 'भरत मिलाप' (1444) और 2. अंगद पैज (1444)। 'भरत मिलाप' में राम के वनगमन के उपरांत भरत-राम मिलन के करुण कोमल प्रसंग को इस काव्य कृति में बड़ी तन्मयता से पदबद्ध किया गया है। 'अंगद पैज' में रावण की सभा में अंगद के पैर जमाकर डट जाने की वीरता का ओजपूर्ण वर्णन किया गया है।

6. गोस्वामी तुलसीदास

राम भक्ति काव्य परंपरा के सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे लोकप्रिय रचनाकार हैं - गोस्वामी तुलसीदास। इन्होंने ब्रजभाषा और अवधी में सरल और सुलभ रूप में रचित अपनी कृतियों द्वारा राम भक्ति काव्य परंपरा का साहित्यिक महत्व बढ़ाया और राम की भक्ति को व्यापक रूप भी प्रदान किया। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राम भक्ति साहित्य को समृद्ध किया। उनकी रचनाएं हैं- भक्तिकाल का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ और महाकाव्य 'रामचरित मानस' (1574), 'जानकी मंगल' (आदि शक्ति भगवती जानकी तथा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के मंगलमय विवाहोत्सव की वर्णन कथा) (1582), 'विनय पत्रिका' (स्त्रोत गीत संग्रह) (1585), 'रामलला नेहछू (राम जनेऊ पर आधारित छंद) (1586), 'गीतावली' (गीत शैली में रामकथा), 'कवितावला' (कवित्त, सवैया, छप्पय आदि छंदों में राम कथा), दोहावली (नीति, भक्ति, राम महिमा, नाम महात्म्य विषयक दोहे), 'बरवै रामायण' (बरवै छंदों में राम कथा)।

राम के एकनिष्ठ और अनन्य भक्त तुलसीदास के 'रामचरित मानस' के महत्व को बताते हुए **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है, ''भारत वर्ष का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ,**

साधनाएं, जातियाँ, आचार, विचार और पद्धतियाँ प्रचलित हैं। तुलसीदास स्वयं नाना प्रकार के सामाजिक कार्य में रह चुके हैं। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। उसमें केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है, अपितु गार्हस्थ और वैराग्य का, भक्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भावावेश और अनासक्त चिंता का समन्वय हुआ है।''

7. आचार्य केशवदास

अलंकारवादी एवं चमत्कारप्रिय कवि केशवदास ने राम के प्रति अपनी भक्ति भावना को 'रामचंद्रिका' (1601) नामक अपने प्रबंध काव्य के माध्यम से व्यक्त किया/ इसके साथ ही उन्होंने अलंकार योजना तथा शब्द चमत्कार पर भी ध्यान दिया। अपने समकालीन कवियों में केशवदास का विशेष स्थान है क्योंकि उन्होंने कवि कर्म करने के साथ-ही-साथ आचार्यत्व का धर्म भी निभाया।

8. रामचरण दास

रामचरण दास राम भक्ति परंपरा में श्रृंगारिकता का समावेश करने वाले कवि हैं। उनकी भक्ति स्वसुखी भाव की है। उन्होंने स्वयं को राम की पत्नी मानकर भक्ति की। इस तरह रामचरण दास राम भक्ति परंपरा में पति-पत्नी भाव की उपासना प्रारंभ करने वाले कवि हैं।

9. भारतेंदु हरिश्चंद्र

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के प्रति आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह की अटूट श्रद्धा थी। उन्होंने लघु काव्य ग्रंथों 'श्री सीतावल्लभ स्त्रोत' (1879) व 'श्री रामलीला' (1879) और 'राम संग्रह' के पद द्वारा राम के प्रति अपनी घोर आस्तिकता एवं निष्ठा प्रदर्शित की। 'दशरथ विलाप' में भगवान श्रीराम, लक्ष्मण व सीता के वन गमन तथा दशरथ विलाप को बड़े ही मार्मिक अंदाज में प्रस्तुत किया।

10. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' (1931) जैसी प्रौढ़ रचना के द्वारा राम भक्ति की परंपरा को आधुनिक काल में विकसित किया। श्रीराम कथा पर आधारित, रामकथा के उपेक्षित पात्रों पर, काव्यात्मक गीति शैली में लिखी इस कथा के केंद्र में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की मनःस्थिति, विरह, व्याकुलता का चित्रण किया, जो कि अत्यधिक मार्मिक और गहरी मानवीय संवेदनाओं व भावनाओं से ओत-प्रोत है।

राम भक्ति साहित्य की विशेषताएं-

1. राम का स्वरूप

राम भक्त कवियों ने राम के सगुण साकार रूप की अर्चना, वंदना व उपासना की। उनके उपास्य इष्ट देव

श्रीराम भगवान विष्णु के अवतार दशरथनंदन हैं। श्रीराम परब्रह्म स्वरूप हैं और उनमें शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वय है। वे पाप का नाश एवं धर्मोद्धार के लिए युग में अवतरित हुए हैं। लोकरक्षक राम अपनी शक्ति से दुष्टों व राक्षसों का संहार करते हैं, धर्म व संतों की रक्षा करते हैं और अपने भक्तों को संकटों से मुक्त करते हैं। अपनी करुणामयता से वे पतितों का उद्धार करते हैं। श्रीराम साध्य हैं और भक्त कवि मानव रूप में उनके साधक हैं।

2. समन्वय भावना

भारत, भारतीय संस्कृति और भारतीय साहित्य की प्रधान विशेषता समन्वय की भावना है। भारत विविधताओं का देश है इसलिए लोक मंगल निमित्त समन्वयात्मक दृष्टिकोण और भी अधिक अनिवार्य हो जाता है। राम भक्त कवियों ने अपने समय के प्रचलित विभिन्न मतों एवं विचारधाराओं का समन्वय स्थापित कर लोक-कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। आदर्श परिवार और आदर्श समाज की स्थापना के लिए राम भक्ति काव्य में जीवन के विविध स्तरों पर समन्वय स्थापित किया। न केवल राम की उपासना, बल्कि गणेश, कृष्ण, शिव आदि देवताओं की स्तुति भी की। ज्ञान, भक्ति और कर्म के बीच भी समन्वय स्थापित करने का सुंदर प्रयास किया। राम भक्ति काव्य में गार्हस्थ और वैराग्य, ज्ञान और कर्म, द्वैत और अद्वैत, ब्राह्मण और शूद्र, भाग्य और पुरुषार्थ, भोग और त्याग, राजा और रंक, लोक और परलोक, शील और सौंदर्य, शैव और वैष्णव, सगुण और निर्गुण आदि में समन्वय स्थापित किया गया है। **रामधारी सिंह दिनकर के मतानुसार- "भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ है, रामकथा उसका अत्यंत उज्ज्वल प्रतीक है। सबसे पहले तो यह बात है कि इस कथा में भारत की भौगोलिक एकता ध्वनित होती है, एक ही कथा में अयोध्या, किशिगंधा और लंका तीनों के बंध जाने के कारण सारा देश एक दीखता है। रामकथा की दूसरी विशेषता है कि इसके माध्यम से वैष्णव और शैव मतों का विभेद दूर किया गया।"**

3. लोक-मंगल की भावना

राम भक्त कवि जितने उच्च कोटि के कवि थे, उतने ही बड़े उपदेशक और नैतिक मूल्यों के कर्णधार भी थे। उनका उद्देश्य मात्र काव्य रचना करना नहीं था, बल्कि उनके काव्य का उद्देश्य था- आदर्श की प्रतिष्ठा, समाज का मार्गदर्शन, उच्च मूल्यों की स्थापना, लोकरक्षा व लोक-मंगल। यही कारण है कि राम भक्ति काव्य में लोक-मंगल, लोकधर्म, लोकरक्षा, लोक चिंता, लोक मानस की प्रधानता है। इसमें गृहस्थ जीवन की उपेक्षा नहीं की गई है, बल्कि राम और सीता की तरह गृहस्थ जीवन में रहते हुए आदर्श व मर्यादित जीवन स्तर स्थापित करने का प्रयास किया गया है। राम भक्ति काव्य में स्वयं राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे आदर्श पुत्र व आदर्श राजा हैं, सीता आदर्श पत्नी है, लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई हैं, हनुमान आदर्श सेवक है, सुग्रीव आदर्श सखा है। अन्य शब्दों में, राम भक्ति काव्य में जीवन का मूल्यांकन आधार व्यवहार की कसौटी है।

4. भक्ति का स्वरूप

राम भक्त कवियों के लिए राम का चरित्र मर्यादाबद्ध है, वे पुरुषोत्तम हैं, इसलिए उनके शील, शक्ति और सौंदर्य पर मुग्ध राम भक्त कवियों ने उनके प्रति श्रद्धा, संयम व दासता के भाव प्रकट करते हुए भक्ति की। इन कवियों ने किसी राजा-महाराजा या विशिष्ट व्यक्ति का गुणगान करने के लिए नहीं, बल्कि स्वांत सुखाय काव्य रचना की। यही कारण है कि राम के प्रति अपनी अनन्य भक्ति भावना प्रकट करते हुए उन्होंने अपने और राम के बीच सेवक-सेव्य भाव को स्वीकारा। यही नहीं, राम भक्ति सहित अन्य देवी-देवताओं की भी स्तुति की।

5. पात्र और चरित्र चित्रण

राम काव्य के पात्र आचार और लोक मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इनका चरित्र महान एवं अनुकरणीय है। इनमें सर्वांगीणता है क्योंकि इनमें जीवन के सभी कर्तव्यों का चित्रण एवं तीनों गुणों, यथारज, तम और सत म राम की काक्ति हुई है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम का पिता, पुत्र, भाई, पति आदि सभी रूपों में चरित्र आदर्श है। राम के अलावा अन्य पात्रों को भी आदर्श चित्रित किया गया है। राजा दशरथ आदर्श पिता, कौशल्या आदर्श माता, सीता आदर्श पत्नी, भरत आदर्श भाई, हनुमान आदर्श भक्त है।

6. काव्य भाषा

राम भक्तिकाव्य की रचनाएं प्रायः अवधी और ब्रजभाषा में लिखी गई हैं। इन दोनों भाषाओं के प्रवाह में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द भी आ गए हैं। इनमें बुंदेली, भोजपुरी, अरबी, फारसी शब्दों के प्रयोग भी यत्र-तत्र मिलते हैं। अवधी में लिखित 'रामचरित मानस' और ब्रज में लिखा 'रामचंद्रिका' काव्य ग्रंथ अत्यधिक प्रसिद्ध है।

7. काव्य शैली

अपनी भावनाओं व विचारों को सुंदर, संवेदनशील, कलात्मक एवं मार्मिक तरीके से प्रस्तुत करना काव्य शैली का महत्वपूर्ण अंग है। राम भक्ति काव्य परंपरा के कवियों ने साहित्य की सशक्त एवं बेहद ईमानदार काव्य शैलियों का प्रयोग कर राम भक्ति काव्य साहित्य की श्रीवृद्धि की। इसमें प्रबंध और मुक्तक दोनों ही काव्य रूपों का प्रयोग किया गया है। 'रामायण' महानाटक (प्राणचंद चौहान), और 'हनुमान' नाटक (हृदयराम) में संवाद पद्धति और 'रामचंद्रिका' (केशवदास) में रीतिबद्ध पद्धति अपनायी गई है।

8. काव्य छंद

काव्य में नियमबद्धता, छंदबद्धता से कविता में स्वाभाविक गति आती है। छंद काव्य की आत्मा होता है और छंदोबद्ध काव्य साहित्य को स्थायित्व प्रदान करता है। अतः काव्य में छंद का महत्व सर्वाधिक होता

है। राम भक्ति काव्य में उस समय के प्रचलित सभी काव्य छंदों, यथादोहा, चौपाई, छप्पय, कवित्त, कुंडलिया, सोरठा, सवैया, घणाक्षरी, तोमर आदि का प्रमुखता से व सफलतापूर्वक प्रयोग मिलता है।

9. रस

रस को काव्य की आत्मा या प्राण तत्व माना जाता है। किसी काव्य को पढ़ने या सुनने के बाद होने वाली रसानुभूति आनंद कहलाती है। राम भक्ति काव्य में रामकथा अत्यंत व्यापक व विस्तृत है, इसलिए उसमें जीवन की विविधताओं व विभिन्नताओं का सहज चित्रण किया गया है। अतः उसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के भावों, अनुभूतियों तथा संवेगों की मनोरम, रसानुकूल अभिव्यक्ति सहज एवं स्वाभाविक रूप से हुई है। सेवक – राम भाव होने के कारण शांत रस की प्रधानता एवं राम के मर्यादा पुरुषोत्तम होने के कारण श्रृंगार रस का सीमित चित्रण हुआ है। महाकवि तुलसीदास के प्रबंध काव्य 'रामचरित मानस' में श्रृंगार और शांति रस के साथ रौद्र, करुण, भयानक, वीभत्स रसों की भी अभिव्यक्ति हुई है।

10. लोक जीवन के कवि

लोक जीवन की दृष्टि से राम भक्ति काव्य की विशेष महिमा है। राम भक्ति हिंदी काव्य परंपरा के समय समाज अनेक प्रकार की भ्रांतियों एवं अशांति का सामना कर रहा था। मुगलों के शासन के कारण भारतीय संस्कृति संकट में थी। ऐसे में इन कवियों ने राम की उपासना करते हुए अपने काव्य के माध्यम से भारतीय समाज को पुनर्गठित करने का प्रयास भी किया। लोक रक्षा के लिए उन्होंने तात्कालीन जीवन से जुड़कर समाज को संदेश दिया। राम भक्ति हिंदी काव्य धारा के कवि सच्चे अर्थों में जन कवि, लोक कवि, लोक जीवन के कवि हैं।

राम भक्ति हिंदी काव्य साहित्य की अमूल्य निधि है। भक्ति रस से सराबोर यह काव्य अवसाद, कुंठा और निराशा से त्रस्त जनता के सामने श्रीराम जैसे सर्व समर्थ, सक्षम, तारणहार के माध्यम से संयमित रहने और आदर्श जीवन जीने का संदेश देता है। ज्ञान, भक्ति और कर्म का सुंदर समन्वय प्रस्तुत कर समन्वयवाद, मर्यादावाद, आदर्शवाद, मानवतावाद जैसे आदर्श स्थापित कर धर्म भाव से जीवन जीने की महत्ता समझाता है।

डॉ. मीना राजपूत
पूर्व - वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

फ़लसफा जिंदगी का.....

महफिल में हँसना मेरा मिजाज़ बन गया
तन्हाई में रोना एक राज बन गया
दिल के दर्द को चेहरे से ज़ाहिर न होने दिया
यही मेरे जीने का अंदाज़ बन गया।

आरम्भ हो अंत न हो
मन इतना भी स्वतंत्र न हो
सुख थोड़ा मिले कोई बात नहीं
किंतु मन में कोई षड़यंत्र न हो।

सौ प्यादे भले ही एक साथ क्यों न रहे
वज़ीर की एक चाल पूरी सल्तनत हिला सकती है।

दिल अमीर था और मुकद्दर गरीब था
अच्छे थे हम मगर बुरा नसीब था
लाख कोशिश करके भी कुछ न कर सके हम
घर भी जलती रही और समंदर भी करीब था।

मेरे साथ बैठ कर वक्त भी रोया एक दिन
बोला, तू आदमी अच्छा है, मैं ही खराब चल रहा हूँ।

कमलकांत
उप महा प्रबंधक
मुख्यालय



गौरैया

देहरी पर आकर गौरैया,
लगी पूछने मुझसे भैया।

पेड़ों की हो गई कटाई,
कच्चे घर की हुई विदाई,

पहले सा दालान नहीं अब,
झुरमुट या खलिहान नहीं अब,

मानव के ऐसे हथकंडे,
खा जाएं मेरे ही अंडे,

नाग घूमते चारों ओरी,
कहां रहूं मैं चोरी-चोरी,

खूब प्रगति के दीप जलाएं,
मंगल ग्रह पर नीर बहाएं,

पर, छोटी-सी बात बताएं,
हम अपना घर कहां बनाएं?

मेरे छोटे-छोटे बच्चे,
प्यारे-प्यारे दिल के सच्चे,

मैं भी मां का फर्ज निभाने,
आज गई थी चारा लाने,

चूं-चूं, चूं-चूं बच्चे गाते ,
भूख लगी,पर वक्त बिताते,

कुटिल सांप ने आंख तरेरे,
निगल गया बच्चों को मेरे,

फटा कलेजा किसे दिखाएं,
किसको दिल का दर्द बताएं,

अब छोटी-सी बात बताएं,
हम अपना घर कहां बनाएं?

दर्द बेचारी सहते-सहते,
व्यथा हृदय की कहते-कहते,

सिसक पड़ी वह रोते-रोते,
गौरैया के आंसू बहते,

देहरी लगी सिसककर रोने,
लगा झरोखा आपा खोने,

धरती भीग गई थी सारी,
चली हृदय पर आज कटारी,

मैं सोचा, उसको समझाऊं,
पेड़ कटे क्यों उसे बताऊं,

पर, इतना ही कहकर दइया,
लुढ़क गई छोटी गौरेया,

तन उसका निष्प्राण पड़ा था,
अब भी उसका प्रश्न खड़ा था,

प्रगति करें,जीभर इतराएं,
लंदन-अमरीका बन जाएं,

पर, छोटी-सी बात बताएं,
हम अपना घर कहां बनाएं?

सुरेश मिश्र
503, एच विंग,गौरव रेजीडेंसी
मीरारोड, पूर्व, महाराष्ट्र - 401107

विश्राम भी जरूरी है

वृक्ष की छांव हमेशा कहां मिलती
कहां मिलते हमेशा हवा के झरोखे
पर थके कदमों को रोक कर
व्यस्त मस्तिष्क को तनिक शांत करना भी जरूरी है
व्यस्त जीवन में विश्राम भी जरूरी है
हमेशा घंटों का अवकाश कहां मिलता
'आज मुझे कोई काम नहीं '
कहने को वर्षो लग जाते हैं
कभी खुद को संभालते हुए आगे बढ़ना
माता-पिता की चिंता,
कभी बच्चों का भविष्य
पर यहां गांवो में और वहां शहरों में
तनिक एकल जीवन में बदलाव भी जरूरी है
व्यस्त जीवन में विश्राम भी जरूरी है
मुस्कुराहट के लिए हमेशा कारण तो जरूरी नहीं
भरी भीड़ में छोटे बच्चे की नादानी
भी मुस्कुराहट दिला सकती है
स्पोटर्स शू, महंगी घड़ियों और ज्वेलरी से
जब फुर्सत मिले, तब ही सही
किसी पुष्प को देखकर 'वाह' कह पड़ना
किसी की शालीनता से 'हतप्रभ' हो जाना
रंग और रोशनी भी 'तारीफ' की हकदार है
जो न मिले छांव तो धूप में ही बैठो जरा
मौसम की ठंड भी जरुरी है
व्यस्त जीवन मे विश्राम का

संतोष कुमार शर्मा
सहायक प्रबंधक
मुख्यालय

हिंदी नवजागरण और भारतेंदु

हिंदी साहित्य के इतिहास में नवजागरण काल का एक विशेष महत्व है। हिंदी नवजागरण प्रथम स्वतंत्रता संग्राम यानि सन 1857 की क्रांति के बाद हिंदी प्रदेशों में राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण से है। नवजागरण का अर्थ होता है नवीन चेतना का जागरण। 1857 की क्रांति के बाद जनता में स्वातंत्र्य - चेतना का जागृत होना नवजागरण काल की प्रमुख विशेषता रही है। किंतु हिंदी नवजागरण के दूसरे चरण की शुरूआत भारतेंदु हरिश्चंद्र से मानी जाती है । 19वी शताब्दी में भारत में एक ऐसी नवीन चेतना का उदय हुआ है, जिसने देश के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक जीवन को नवचेतना एवं नवजागरण प्रदान किया, जिसे भारतीय नवजागरण और पुनर्जागरण के नाम से जाना जाता है। पुनर्जागरण का अर्थ विद्या, कला, विज्ञान, साहित्य और भाषाओं इत्यादि सभी क्षेत्रों में एक नवीन सोच, दृष्टि के विकास होता है। यह नवीन युग काल, प्रवृत्ति, चेतना, विधा हर दृष्टि से नया था। यह नवीन चेतना आधुनिकता से सम्पृक्त थी। जिसे हिंदी साहित्य के इतिहास में हिंदी नवजागरण काल कहा गया।

भारतेंदु का जीवनवृत्त –

बहुमुखी प्रतिभा के सम्पन्न भारतेंदु का जन्म 09 सितंबर, 1850 को काशी, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम गोपालचंद्र एक अच्छे कवि थे और "गिरधरदास" उपनाम से कविता लिखा करते थे। भारतेंदु महज पांच वर्ष के थे तो माता की मृत्यु और दस वर्ष के थे तो पिता की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार बचपन में ही माता-पिता के सुख से वंचित हो गए। बचपन का सुख नहीं मिला क्योंकि विमाता ने खूब सताया। भारतेंदु का जीवन काल बहुत कम था। इनकी मृत्यु महज 35 वर्ष के आयु में 6 जनवरी, 1885 को हुई । इनका मूल नाम "हरिश्चंद्र" था तथा "भारतेंदु" इनकी उपाधि थी ।

भारतेंदु की साहित्यिक योगदान –

समाज में चल रहे कुरीतियों का अपने साहित्य के माध्यम से विरोध करना भारतेंदुयुगीन साहित्य का प्रधान लक्ष्य था। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपना संपूर्ण जीवन हिंदी साहित्य की सेवा में समर्पित कर दिया। हिंदी नाटक, गद्य, कविता और पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका योगदान अविस्मरणीय है। इसके अतिरिक्त वे पत्रकार, वक्ता, निबंधकार एवं उत्कृष्ट कवि भी थे। हिंदी साहित्य में खड़ी बोली में नाटक का शुरूआत का श्रेय भारतेंदु को जाता है । इन्होने हिंदी में नाट्य विद्या की शुरूआत की। भारतेंदु ने बंगला के **विद्यासुंदर** (1867) नाटक के अनुवाद से अपना नाटक लिखना आरंभ किया था । इसके अतिरिक्त कई मौलिक नाटक लिखे जैसे-भारत दुर्दशा, प्रेम जोगिनी, चंद्रावली, नीलदेवी, अंधेर नगरी इत्यादि है। अपने छोटे से जीवन काल में 48 प्रबंध काव्य, 21 काव्य ग्रंथ एवं मुक्तक रचानाएं लिखी ।

इन्ही विशेषताओं के कारण सन् 1850-1900 ई. के कालखंड को हिंदी साहित्य का नवजागरण

काल या भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। भारतेंदु ने अपने लेखनी से देश के लोगो के अंदर देशभक्ति को जगाए रखना और समाजिक कुरीतियों के प्रति जनता को जागृत करने का कार्य किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र न केवल स्वदेशी आंदोलन के ही अग्रदूत थे बल्कि वह समाज सुधारकों में भी प्रमुख थे। सन् 1868 ई. में महज 18 वर्ष की आयु में उन्होनें **'कवि वचन सुधा'** नामक पत्रिका प्रकाशित की जिसमें उस वक्त के बड़े- बड़े विद्वानों की कृतियां छपती थी । सन् 1873 में **"हरिश्चंद्र मैगजीन"** एवं 1874 ई. स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए **"बाल बोधिनी"** नामक पत्रिका प्रकाशित किया। उन्होंने हिंदी साहित्य के दायरे का चतुर्मुखी विकास किया। उनके लेखन में दोहा, चौपाई, हरिगीतिका, छंद, कवित्त, सवैया, आदि में उत्कृष्टता का परिचय मिलता है। सुमित्रा नंदन पंत इनके हिंदी साहित्य में योगदान की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं-

"भारतेंदु कर गए, भारती की वीणा निर्माण।
किया अमर स्पर्शों में, जिसका बहुविधि स्वर संधान ।।"

भारतेंदु मंडल और उनका योगदान –

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने देश के विभिन्न कोने तक लोगों को जागृत करने के लिए अपने समानधर्मा कवियों तथा लेखकों का एक मंडल तैयार किया, जिसे **"भारतेंदु मंडल"** के नाम से जाना जाता है। भौगोलिक दृष्टि से भारतेंदु मंडल का विस्तार काशी से दिल्ली तक था। भारतेंदु मंडल के सदस्य है – स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र, केशवराम भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, गोस्वामी राधा चरण, लाला श्रीनिवासदास, लाला सीताराम, दामोदर शास्त्री सप्रे, कार्तिक प्रसाद खत्री, ठाकुर जगमोहन सिंह, अंबिका दत्त व्यास, रामकृष्ण वर्मा और राधा कृष्ण दास।

ये लेखक अधिकतर काशी तथा अन्य पूर्वी नगरों के थे। भारतेंदु के व्यक्तित्व का प्रभाव वृत पश्चिम में वृंदावन और दिल्ली तक फैला हुआ था। नवीन युग की वैज्ञानिक चेतना, यंत्रों के विकास के साथ छापेखानों की मशीनों के प्रचलन, बढ़ते औद्योगीकरण, नगरीकरण, राष्ट्रीय-राज्यों के उदय जैसी परिस्थितयों ने हिंदी साहित्य के गद्य को बढ़ावा दिया। यह गद्य साहित्य 19वीं सदी के उतरार्द्ध तक इतना प्रभावी हुआ कि वह कविता से अधिक महत्वपूर्ण हो उठा । इस युग के रचनाकारों ने भिन्न-भिन्न विधाओं में अपनी रचना लिखे जैसे – भारतेंदु ने नाटक, श्रद्धाराम फिल्लौरी तथा लाला श्रीनिवास दास ने उपन्यास, बाल कृष्ण तथा प्रताप नरायण मिश्र ने निबंध, बदरीनरायण चौधरी प्रेमघन ने आलोचना लिखा । भारतेंदु के यहां जो सतरंग फूटा वह चतुर्दिक प्रकाश बनकर फैल गया ।

इन्होने अपने युग के रचनाकारों को अलौकिक जगत से हटकर समाज में फैली कुरीतियों जैसे बाल-विवाह, पर्दा- प्रथा, नारी अशिक्षा, धार्मिक पाखंड का विरोध एवं मानव तथा तर्क पर आधारित रचना लिखने को प्रोत्साहित किया।

हिंदी भाषा के प्रति उनका समर्पण -

भारतेंदु से पहले हिंदी भाषा शैली के दो रूप प्रचलित थे – एक राजा लक्षमण सिंह की संस्कृतनिष्ठ

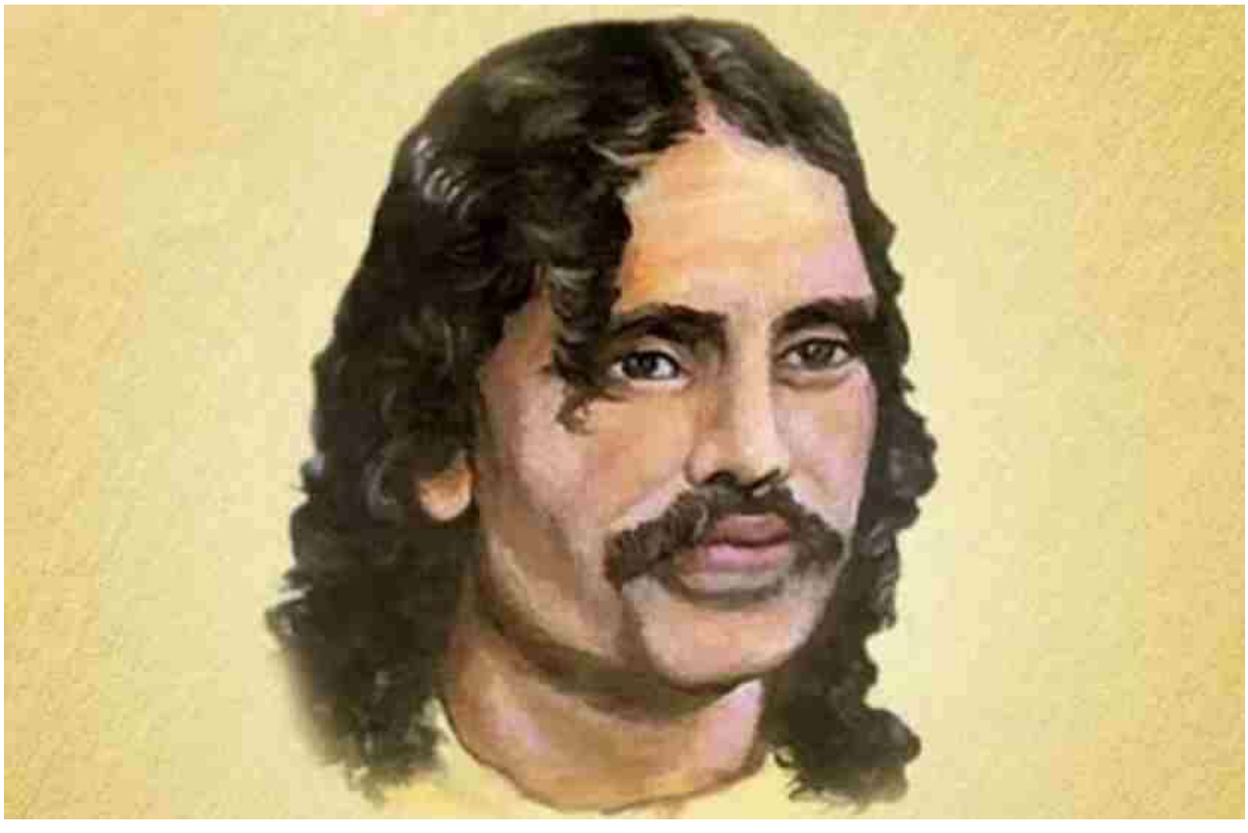
भाषा शैली और दूसरी राजा शिव प्रसाद सितारे हिंद की फारसी मिश्रित हिंदी भाषा शैली । हिंदी साहित्य में खड़ी बोली हिंदी में नाटक लिखने का काम सर्वप्रथम इन्होने किया। सन् 1873 ई. में अपनी पत्रिका **"हरिश्चंद्र मैगजीन"** में हिंदी भाषा की नई भाषा शैली खड़ी बोली का प्रयोग किया। ये गद्य के लिए तो खड़ी बोली का प्रयोग करते थे किंतु पद्य ब्रजभाषा में रचते थे। मातृभाषा के सेवा में उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया । हिंदी भाषा की उन्नति के संदर्भ में कहा है-

" निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति कै मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे ना हिय के शूल ।।"

इन्होने हिंदी साहित्य में लगभग 72 ग्रंथों की रचना कर हिंदी भाषा को नई बुलंदियों पर पहुंचाने का काम किया है।

हिंदी नवजागरण के अग्रदूत माने जाने वाले भारतेंदु एक व्यक्ति से बढ़कर एक संस्था थे। जिन्होनें हिंदी साहित्य में एक नई युग एक नई चेतना का सुत्रपात किया। हिंदी भाषा की सेवा में इन्होने अपना सर्वस्त्र न्यौछावर कर दिया। हिंदी सिनेमा की एक चर्चित फिल्म **"आनंद"** का यह डायलॉग "जिंदगी लंबी नहीं.... बड़ी होनी चाहिए।" साहित्य के महान विभूति **"भारतेंदु हरिश्चंद्र"** पर सटीक बैठता है जिन्होने अपने 35 वर्ष की अल्पायु में हिंदी भाषा को चरम उत्कर्ष पर पहुंचा दिया।

रुचि सिंह
हिंदी अनुवादक



बचपन

“काग़ज़ की कश्ती थी पानी का किनारा था, खेलने की मस्ती थी ये दिल अवारा था,
कहाँ आ गए इस समझदारी के दलदल में, वो नादान बचपन भी कितना प्यारा था।”

हम सभी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय बचपन होता है, जिसे हर कोई फिर से जीना चाहता है। जरूरी नही की हर किसी का बचपन एक जैसा हो लेकिन बचपन जिस चंचलता और मिठास से भरा होती है की हर कोई उस अवस्था की ओर जाने का ईच्छूक होता है। लेकिन वक्त कि तो यह मांग ही होती है कि जो चला गया है वो कभी लौट के नहीं आता। बचपन में वह धीरे-धीरे चलना, गिर पड़ना और फिर से उठकर दौड़ लगाना, पिताजी के कंधे पर बैठकर मेला देखने का जो मजा होता था वह अब नहीं आता है।

बचपन में मिट्टी में खेलना और मिट्टी से छोटे-छोटे खिलौने बनाना किसकी यादों में नहीं बसा है। बचपन में जब कोई डांटता था तो मां के आंचल में जाकर छुप जाना मां की लोरियां सुनकर नींद का आना लेकिन अब वह सुकून भरी नींद नसीब नहीं होती है । वो सुनहरे दिन जब हम खेलते रहते थे तो पता ही नहीं चलता कब दिन होता और कब रात हो जाती थी। कोई भी काम बिना डर के कर डालते थे। जैसे- किसी के बाग में जाकर फल तोड़ना और बगीचे के मालिक को देख कर वहां से भागना किसको याद नहीं आते। शायद इसीलिए बचपन जीवन का सबसे अनमोल पल होता है। बचपन सपनों का घर होता है, जहां हम हर रोज दादा-दादी के कहानी सुनकर उन कहानियों में ऐसे खो जाते थे मानो उन कहानियों का असली पात्र हम स्वयं ही हैं। बचपन के वह दोस्त जिनके साथ रोज सुबह-शाम खेलते, गांव की गलियों के चक्कर काटते और खेतों में जाकर पंछी उड़ाते और और और गांव में बचपन में सावन का महीना आने पर हम पेड़ पर झूला डाल कर झूला झूलते थे। यह ही एक ऐसी अवस्था होती है, जहां हमारे अंदर न किसी के लिए भेदभाव होता है न किसी के लिए कपट की भावना होती है। निश्छलता, मधुरता का समागम बचपन होता है।

जब हम छोटे थे तब बड़े-बड़े सपने देखते थे कि और सोचते थे कि बड़ा होना कितना अच्छा होता है। वही बड़े होने पर पता चला की बचपन कितना अच्छा था ।

“बचपन का जमाना था, खुशियों का खजाना था
चाहत चांद को पाने की थी, पर दिल तितली का दिवाना था ।’’

बचपन, जीवन का सबसे मज़ेदार और यादगार पल होता है । जहां न कोई डर था न किसी को लेकर भेदभाव की भावना थी। यह हमारे जीवन का एक मात्र ऐसा क्षण होता है, जिसे हम अपनी शर्तों पर जीते है। अनिश्चितता की इस दुनिया में एकमात्र बचपन ही ऐसा होता है जहां हम सभी चिंताओं, व्यस्त जीवन के खतरों

और तनाव से मुक्त होकर स्वछंद होकर जीते है।

पढ़ाई का तनाव हमने पेन्सिल का पिछला हिस्सा चबाकर मिटाया था, पुस्तक के बीच पौधे की पत्ती और मोरपंख रखने से हम होशियार हो जाएंगे ऐसा हमारा दृढ विश्वास था। कपड़े के थैले में किताब कॉपियां जमाने का विन्यास हमारा रचनात्मक कौशल था। हर साल जब नई कक्षा के बस्ते बंधते तब कॉपी किताबों पर जिल्द चढ़ाना हमारे जीवन का वार्षिक उत्सव था। माता पिता को हमारी पढ़ाई की कोई फ़िक्र नहीं थी, न हमारी पढ़ाई उनकी जेब पर बोझ थी। सालों साल बीत जाते पर माता पिता के कदम हमारे स्कूल में न पड़ते थे। एक दोस्त को साईकिल के डंडे पर और दूसरे को पीछे कैरियर पर बिठा हमने कितने रास्ते नापें हैं, वह स्मृतियां जब भी याद आती है तो चेहरे पर मुस्कान स्वयं ही छा जाती है। स्कूल में शिक्षक द्वारा मार खाने और मुर्गा बनाये जाने पर हमारा ईगो हमें कभी परेशान नहीं करता था, दरअसल हम जानते ही नही थे कि ईगो होता क्या है ? पिटाई हमारे दैनिक जीवन की सहज सामान्य प्रक्रिया थी, पीटने वाला और पिटाई खाने वाला दोनो खुश थे, पिटाई खाने वाला इसलिए कि कम पिटे, पीटने वाला इसलिए खुश कि हाथ साफ़ हुआ। आज हम गिरते - सम्भलते, संघर्ष करते दुनियां का हिस्सा बन चुके हैं, कुछ मंजिल पा गये हैं तो कुछ न जाने कहां खो गए हैं । हम दुनिया में कहीं भी हों लेकिन यह सच है, हमे हकीकतों ने पाला है, हम सच की दुनियां में थे। कपड़ों को सिलवटों से बचाए रखना और रिश्तों को औपचारिकता के लिए बनाए रखना हमें कभी नहीं आया इस मामले में हम सदा मूर्ख ही रहे। अपना अपना प्रारब्ध झेलते हुए हम आज भी ख्वाब बुन रहे हैं, शायद ख्वाब बुनना ही हमें जिन्दा रखे है, वरना जो जीवन हम जीकर आये हैं उसके सामने यह वर्तमान कुछ भी नहीं । हम अच्छे थे या बुरे थे पर हम एक साथ थे, काश वो समय फिर लौट आए।

कहते है कि एक खुशहाल बचपन एक सफल वयस्कता का निर्माण करता है। बच्चे बिना किसी उचित गंतव्य वाले वाहनों की तरह होते हैं जिसे अपनी इच्छानुसार किसी भी दिशा में चला सकते हैं। इसलिए बच्चों के बचपना को बनाए रखना चाहिए। क्योंकि बचपन वो पल है जो गुजरने के बाद कभी नहीं आता। बस रह जाती है उसकी खुशहाल व स्वर्णिम यादें, जिसे बाद में हम सोच कर ही खुश हो जाते हैं।

(मधुकर गोसावी)
अनुभाग अधिकारी
मुख्यालय



पाँचवां काँधा

'बड़ी जीजी का मोह बहुत हिलोरें मारता है तो उठाए चारपाई और ले जाए। बेटी को गुस्सा ही न मार बैठे, भई बुढ़िया से पीछा छुड़ाने के लिए कहीं बहुओं ने उसका टेटुआ ही तो नहीं दबा दिया।'

लकवे से पीड़ित गुरदेव कौर की ज़ुबान जवाब दे गई थी, परंतु कान सलामत थे। चारों बहुओं में से किसी न किसी के शब्द तीर बन कर चुभते और दिल को भी घायल कर जाते।

निजी नित्यक्रिया से अक्षम हुई तो बहुओं ने चारपाई बीच में से काट उसके नीचे तसला टिका दिया। कपड़े बदलने में मुश्किल हुई तो तन पर फतूही पहना कर, निचले हिस्से पर चादर डाल दी। कभी धूल का एक कण न सहने वाली सरदारनी अब फालतू सामान बन झाड़-पोंछ के लिए तरसती रहती।

एक ही इंतज़ार। कब मौत आए, कब जान छूटे।

जिस बेटे के सहारे जीती थी, उसने भी हड्डियों की गठरी संभालने से पल्ला झाड़ लिया था।

सवाल उठा, जब माँ सबकी साझी है तो फिर उसकी ज़िम्मेदारी कोई एक अकेला क्यों उठाए ?

और, फैसला हो गया।

माँ को बारी-बारी से महीना-महीना भर सभी बेटे अपने पास रखेंगे। पिता द्वारा मृत्यु से पूर्व माँ के नाम लिखी जायदाद का आकलन करवा कर जिस किसी का हाथ तंग न हो अपने नाम कर ले, बाकियों को हिस्सा दे दे। नहीं तो बेच दी जाए। बहनों को एक-एक तोला सोने की बालियां बनवा कर बाकी रकम चारों भाई आपस में बाँट लें। न कोई अकेला खाए, न किसी के पेट में ऐंठन हो। जिसके घर माँ अंतिम साँस लेगी, अंत्येष्टि की रस्में उसी के यहाँ निभाई जाएंगी। खर्च सभी भाईयों द्वारा साझे तौर पर किया जाएगा। लंबी उम्र भोग कर भगवान को प्यारी हुई माँ का संस्कार इस तरह किया जाए कि बिरादरी की आँखें फटी की फटी रह जाएं।

सब कुछ निर्धारित कर गुरदेव कौर की चारपाई एक से दूसरे बेटे के दर के फेरे लगाने लगी।

गली के चक्कर लगाती चारपाई मुहल्ले में लगने वाली मजलिसों के लिए जिहवा और कर्ण रस बन गई थी। महीने का अंतिम सप्ताह जहाँ एक पुत्र के लिए सुकून और राहत भरा होता वहीं दूसरे के घर में महीने के मध्य से ही मातम पाँव पसारने लगता। शुक्र और मुसीबत की मुँह बोलती तस्वीर बनी गुरदेव कौर सूख कर काँटा हो गई थी। कई-कई दिन आँखों में नींद न ठहरती। सोती तो जगना भूल जाती। सीधी कर देते तो वह एक टक छत की तरफ देखते हुए बाँहें उलारने लगती। साइड बदल देते तो दरवाज़े की तरफ तकते हुए कुरलाने लगती। तंग आकर घर वालों ने उसका मुँह दीवार की तरफ कर दिया। दीवार की तरफ टकटकी लगाए वह आँखें झपकाना भूल जाती।

खुली आँखें, अटल पड़ा तन परिवार के लिए आशा की किरण जगाता। दीया बाती बनाते। नीचे उतार कर अगली राह दिखाते। चलती साँस अंतिम न बनती और परिवार की उम्मीदों के खिले फूल मुरझा जाते।

'यह न मरती। पता नहीं किन युगों का बदला ले रही है। रब जाने और कितना नरक भोगना लिखा है। बुलाओ रत्तो बुआ को। कुछ उपाय करे आकर। पता नहीं कहाँ जान अटकी है बुढ़िया की।'

उपाय करती गुरदेव कौर की ननद रत्तो, उसके गुणों का पिटारा खोल बैठती।

'वक्त और बीमारी की मार से बिस्तर से लग गई। नहीं तो इसके जैसी साफ़-सुथरी सुघड़ महिला भला दूसरी कौन होती ?'

गुड़ियों से खेलती गुरदेव कौर को शादी के दुपट्टे में लपेट भाईयों ने डोली में बिठा दिया। नन्हीं सी परी नाचती-कूदती हुई सोच रही थी कि जैसे वह अपनी गुड़ियों के ब्याह रचा कर डोली विदा करती है वैसे ही उसके माता-पिता उसके साथ वही गुड़ियों वाला खेल खेल रहे हैं। ससुराल में कदम रखने वाली नन्हीं मासूम सी जान के गले लाखों मुसीबतें। जेठ-जेठानी, देवर-ननद, सास-ससुर के बड़े परिवार में लंबा सा घूंघट काढ़े अपने गुड्डे के साथ छुपा-छुपी का खेल भी खेलना होगा इस बात से अन्जान।

उसका गुड्डा स्वर्ण सिंह उससे लगभग सात-आठ साल बड़ा था। हल्की सी दाढ़ी। मौलवी से पाँच जमाते पास। सांसारिक हिसाब-किताब करता। कठपुतलियां नचाना जानता। कभी शाह की दुकान से मीठी गोलियां लाकर गुड़िया की मुट्ठी में भर देता तो कभी फूल-मखाणे। कभी उससे रूठ जाता, कभी साथ के मुहल्ले के बच्चों के साथ खेलने पर पीट देता। फिर लाड से उसके बालों में फूल-पत्ते टांक देता और दीये को फूंक मार कर बुझा कर उसके आँचल में बताशे डाल बहलाने लगता। गुड्डे के साथ खेलती गुड्डी कभी बहल जाती तो कभी रूठ जाती।

रूठने-मनाने के खेल में वह घर के छोटे-छोटे कामों में सास का हाथ बंटाने लगी। गुणों का पिटारा सास, माँ से भी ज़्यादा लाड लडाती। गुरदेवां, गुरदेवां करते मुँह न थकता। बच्ची जान उस पर ज़्यादा बोझ न डालती और खेलने देती।

हँसती, खेलती गुरदेव कौर साथ लगते मुसलमानों के मुहल्ले में जा बैठती। भाभी फातिमा के साथ रंग-बिरंगी सेवइयां बनाती। मेवे और चावल चुनती। कभी दूसरे छोर पर चौधरियों के मुहल्ले में रहती अम्मा नरैणो के चरखे की पूणी कातने लगती। दरी में बेल-बूटे बनाना सीखती स्वर्ण सिंह के चादरे (तहमद) पर मोर नचाने लगी।

कब कपड़े आए, कब गोद हरी हुई सब कुछ से बेखबर अपने गुड्डे का हाथ थामे गृहस्थी की दौड-भाग में जुट गई। कोख से खिली कली ने किलकारी मारी। वह गुड़िया से गुड़िया की अम्मी बन गई। नन्हीं सी गुड़िया को गोद में उठाए हाथों में उछालती लोरियां सुनाती –

हँस रे रुई के बावे, माँ वारी जावे....।
तेरी दूर हों सारी बलाएं, माँ लाड लडाए...।

घर के बुजुर्ग ने पोथी से वाक ले कर उस गुड़िया का नाम वीरपाल कौर रखा। तिस पर वीर लेकर आने की अरदास करते हुए वह वीरां हो गई।

वीरपाल अभी मुश्किल से छह माह की हुई थी कि गुरदेव कौर के दिन पूरे हो गए। उसकी कोख में एक और प्राणी पलने लगा, अहसास तब हुआ जब पसली के एक तरफ हल्की सी सरसराहट सी महसूस

हुई। लगा नाग से मिलती-जुलती शै घूम कर दूसरे कोने में जा घुसी हो। पीपल के नीचे वीरां के साथ वीर के खेलने की कल्पनाएं होने लगी। चांदनी और अंधियारी रातों का हिसाब-किताब कर बेटी होगी या बेटा की तकरीरें होने लगीं। बुजुर्ग महिलाएं गुरदेव कौर की नाभी से धागा नाप कर शर्तिया पुत्र होने की तसल्ली देतीं।

दायां पैर पहले उठाती है, लड़का ही होगा। बीबी नरैणों ने पक्की मोहर लगाई और जचगी से पहले ही बताशों की टोकरी बाँट सभी शगुन के गीत गाने लगीं।

पूनम का चाँद पूरे शबाब पर दमक रहा था। गुरदेव कौर के पेट में दर्द उठा और पसलियों में से धुआँ सा उठने लगा मानो रात का दूसरा पहर शुरू हुआ। प्रसव वेदना से कराहती गुरदेव कौर के कानों में बेटे का पहला रूदन सुनाई दिया। माँ के मुँह से निकला, 'चंदा' मेरा 'चंदा।'

चंदा की चूरी कूटने की रस्म तीन मुहल्लों ने साझे तौर पर निभाई गई। साझे चूल्हे पर भाँति-भाँति के पकवान बनाए गए।

तीन मुहल्लों की साझी रग कुश्तियां होती, अखाड़े लगते। सभी एक-दूसरे के सहारे पुष्पित-पल्लवित होते। मर्द काम-धंधों में साझेदारी निभाते तो गृहणियां भी चूल्हे-चौके से फारिग हो बड़े पीपल के नीचे चारपाई बिछा लेतीं। रस्सियां बांटी जाती, नाड़े अटेरे जाते, बाग-फुल्कारियों में रेशम से सुगंध भरते हुए दिल की गिरहें खोलतीं। देसी नुस्खे पूछे और बताए जाते। पीपल ही वैद और हकीम बन जाता। सावन का महीना आते ही पीपल तीज बन नाच उठता।

कौन जानता था...? हँसी-ठिठोली के फव्वारों में से कोई एक कड़कड़ाती हुई बिजली ज़मीन पर गिरेगी, आसमान दो हिस्सों में बंट जाएगा। देखते-देखते हँसों की कतारों ने भेड़ियों का रूप धारण कर लिया। क्षत्रियों और चौधरियों के मुहल्ले एक तरफ दूसरी तरफ मुसलमानों के मुहल्ले ललकारने लगे।

'जान से ही जहान है। जैसे भी हो निकलने की करो। शांत होते ही लौट आएंगे मुहल्ले में। घर ढह भी जाए, तो ज़मीन कहीं नहीं जाती।'

घर के बुजुर्गों ने गहने वगैरह आँचल से बांध गुरदेव कौर और उसकी देवरानियों-जेठानियों को आगे कर लिया। देखते ही देखते पीपल की छाया वीरान हो गई।

शाम हो रही थी। किसी तरफ से भी स्वर्ण सिंह और उसके भाइयों की कोई खोज-ख़बर न मिली। गुरदेव कौर के मन में उबाल सा उठने लगा। दोनों बच्चों को सास की गोद में डाल बरसती आग में पति को ढूँढने निकल पड़ी। मील भर ही चल कर गई कि चीख-पुकार करते लोगों की भीड़ को मुहल्ले की तरफ आते देखा।

'हाय मेरा गुड्डा और गुड़िया।' रोते-बिलखते उन्हीं कदमों से घर की तरफ दौड़ पड़ी।

अचानक उसके पैरों के पास बर्छी गिरी और किसी ने सर से कपड़ा खींच लिया। ज्यों ही मर्दाना बाँहों ने उसकी कमर के गिर्द घेरा डाला, वह दुर्गा बन दहाड़ी। आव देखा न ताव पूरे ज़ोर से अपनी उलटी टाँग वहशी के गुप्तांग में दे मारी। पीड़ा से कराहते हुए बल खाकर वह ज़मीन पर सिकुड़ गया। गुरदेव कौर ने

बर्छी उठाई और उसके पेट के आर-पार कर दी। खून से लथ-पथ बर्छी हवा में लहराते हुए चंडी बन घर की तरफ दौड़ पड़ी।

दोनों बच्चों को सीने से लगाया और भौंचक सी देखते हुए वह काफ़िले में जा मिली। स्वर्ण सिंह का ख़याल मन को तड़पा रहा था। अंतर्मन कराह उठता।

तेरी सस्सी थलों में मारी फिरती
कहाँ छुपा है मेरे चाँद
वे मोड़ मुहार वे
दिल के जानी
तेरे बगैर अंधेरे
वे मेरी रूह के राजा।

अफ़रा-तफरी में छोटे-छोटे दो मासूमों को गोद में उठाए गुरदेव कौर काफ़िले से पिछड़ गई। बीयाबान। आदमी न परिंदा। वह कुछ मील चलती गई। फिर तन से प्राण निकलते से प्रतीत हुए। थक, हार कर एक पेड़ की आड़ में बैठ गई। वीरपाल और चन्न को आँचल में लिए उन्हें पलोसा। चन्न का बदन भट्ठी की भाँति तप रहा था और वीर भी नीम बेहोशी में ऊँघ रही थी। गुरदेव कौर की जान पर बन आई। घबरा कर उसने कुर्ती हटा कर लड़के को सीने से लगा लिया। दो दिन से भूखा पेट, दूध कहाँ से उतरता। सूखी छातियों को पीटते हुए गुरदेव कौर चीत्कार कर उठी। बच्चों को काँधे से लगाया और जिधर मुँह हुआ उधर दौड़ पड़ी।

अचानक पानी से भरे एक तालाब पर निगाह पड़ी। बच्चों को तालाब के किनारे लिटा कर सर से दुपट्टा उतारने के लिए सर की तरफ हाथ बढ़ाया। सर नंगा था। अपनी कुर्ती के सामने वाले घेरे से थोड़ा सा छोर फाड़ कर पानी में डुबो कर दोनों बच्चों के माथे पर पट्टियां रख दीं। बूंद-बूंद पानी उनके होठों से लगाया। बच्चों ने करवट ली। आँसुओं के सैलाब में दोनों बच्चों को बारी-बारी से चूमते हुए इधर-उधर नज़र दौड़ाई। कुछ फर्लांग की दूरी पर मुँह में रोटी का टुकड़ा लिए कुत्ता दौड़ा जा रहा था। गुरदेव कौर ने पत्थर उठाया और पूरे ज़ोर से कुत्ते पर दे मारा। कुत्ते के मुँह से रोटी गिर गई। उसने एक और पत्थर उठाया और कुत्ते के टाँगों पर दे मारा। कराहता हुआ कुत्ता भाग गया। गिरते-पड़ते रोटी का टुकड़ा उठाया। सूखा लकड़ी जैसा। पानी में भिगोया। कुछ नर्म हो गया। थोड़ा-थोड़ा सा तोड़ कर बच्चों के मुँह में डाला।

ढलता हुआ दिन ख़ौफ बन सर पर मंडराने लगा। समझ न आए किधर जाए। रब का नाम ले दोनों बच्चों को गोद में उठा लिया। पैरों की सेध में कदम बढ़ाया ही था कि चन्न की गर्दन एक तरफ लुढ़क गई। तेज़ बुखार से वह फिर बेहोश हो गया था। गुरदेव कौर के हाथ-पाँव फूल गए। उसने दोनों बच्चों के मुँहों की तरफ देखा। दिल कड़ा करके वीरपाल को एक पेड़ के नीचे बिठाया और चन्न को गोद में ले कदम आगे बढ़ाया। पीछे मुड़ कर देखा वीरपाल बाँहें फैला कर रोए जा रही थी। माँ की ममता ने उछाल मारा। कदम रुके, फिर गोद के बच्चे को संभालते हुए दौड़ पड़ी। वह किधर दौड़ रही थी, होश नहीं। हल्का-हल्का अंधेरा छाने लगा था। लोगों की आवाज़ें कानों में पड़ी। सर पर बर्छे मंडराने लगे। आँखों के सामने अंधेरा छा गया और वह चक्कर खाकर ज़मीन पर गिर पड़ी।सर पर

बर्छे मंडराने लगे। आँखों के सामने अंधेरा छा गया और वह चक्कर खाकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

होश आया। सीने से लगी हिचकियां लेती वीरपाल बीबी, बीबी पुकार रही थी। गुरदेव कौर घबरा गई।

'चन्न, मेरा चन्न कहाँ है ?'

'ठीक है तेरा चन्न भी। बेटी को संभाल। कहाँ छोड़ आई थी अभागी उसे ?' उसका सर सहलाते हुए बीबी नरैणो ने पूछा।

'चन्न कहाँ है बीबी ? वीरां कैसी है ? इनका बापू ? हम कहाँ हैं ?' उसकी आँखें फिर मुंदने लगीं।

सुनसान-बीयाबान में अकेली बिलखती बच्ची को देख तेरा काका लाख रोकने के बावजूद न रुका और गोद में उठा लाया। वह तो मैंने पहचान लिया, कि भई यह तो गुरदेवां की वीरो है। जैसे भी हो सका अपने बच्चों के संग इसे भी लेते आए। अब संभाल इनको और होश से काम ले। शुक्र कर शरणार्थी कैंप में पहुँच गए हैं। कह कर नरैणो ने ला कर चन्न को भी उसकी गोद में डाल दिया।

भारत-पाकिस्तान दो आज़ाद देश अस्तित्व में आ चुके थे। बंटवारे का शिकार हुए लोगों के पुनर्वास का काम शुरू हो चुका था। पाकिस्तान से ज़मीन-जायदाद के विवरण के अनुसार गुरदेव कौर के परिवार को विभाजित पंजाब के अलग-अलग स्थानों पर सौ एकड़ ज़मीन अलॉट हो गई। किसी मर्द का साया सर पर न बचा था। बूढ़ी सास और दादा ससुर के सहारे बाल-बच्चे ले सभी शरीकनों ने हुसैनी वाला बॉर्डर से कुछ किलोमीटर दूर अपने हिस्से आई ज़मीन पर आ डेरा डाला। गुरदेव कौर और उसकी देवरानियां-जेठानियां भाग-भाग कर रास्तों की धूल खंगालतीं। रहबर आँखों का नूर न बनते। वे बिलखतीं, तड़पतीं।

न हवा तन को सुहाती
जीवन को खोखला बनातीं
कैसा हरियाला सावन
दिल के महरमा
वे हमें मिली जुदाइयां...।

क्षत्रियों के मुहल्ले के सभी मर्द पता नहीं किस कुएं में जा गिरे थे, कोई खोज-ख़बर नहीं। धीरे-धीरे यकीन होने लगा, मुहल्ले पीछे छूट गए। अब इधर फिर से टोलियां बसानी पड़ेंगीं। अपने हाथों से गारा ढोया, ईंटें थापी, लिपाई की और गुरदेव कौर ने भी अपने बच्चों के लिए एक कोठरी बना ली।

ज़िंदगी की गाड़ी फिर से चल पड़ी परंतु पीछे छूटीं मुहल्ले की बड़ी हवेली और पीपल की छांव में लगने वाली महफिलें दिल में टीसतीं। स्वर्ण सिंह की मधुर यादें दिल को मथतीं। रात भर करवटें लेते हुए बच्चों की तरफ ध्यान लगाती –

सोने का पलंग बिछाऊं
उस पर सलोने लल्ला को खिलाऊं
तेरी दूर हों सारी बलाएं

जगत के प्रकाश
पिता का अंश बढ़ाना।
(लोरी कब वैराग्यपूर्ण गीत में बदल जाती पता ही नहीं चलता,)
टूट गए पायल के घुंघरू वे
रूठ गए वन के मोर वे
तू मोड मुहाड़ वे
दिल के महरमां
तेरे बिन जग अंधियारा
मैं खींचूं माटी में लकीरें।

रो-रो आँसू भी सूख गए। आख़िर गुरदेव कौर और उसके बाकी शरीकों ने भाग्य के सामने हथियार डाल पीछे छूटे रिश्तों के तार तोड़ डाले। गुरदेव कौर ने शादी वाला सालू (दुपट्टा) संभाल कर रख दिया और सफेद दुपट्टा ओढ़ लिया। ख़ुद ही खेती-बाड़ी करने की ठानी।

बीयाबान बंजर धरती को खेती योग्य बनाना कौन सा आसान काम था। शरीकों के साथ साझी खेती शुरू की। वीरपाल और चन्न उसके बिना एक पल न रहते और वह उनके बिना। आठ-नौ महीने इस जद्दो-ज़हद में गुज़र गए। किसे मालूम था कि जीवन के पतझड़ में फिर से बहार दस्तक देगी और सूखे की मारी धरती फिर से उपजाऊ बन जाएगी।

दोनों मुल्कों की सरकारों ने पीछे छूट गए लोगों को अपने-अपने मुल्क भेजने का प्रबंध किया। इसी अवसर ने गुरदेव कौर की उजड़ी दुनिया को फिर से आबाद कर दिया। प्रभात ने आँखें खोलीं तो गुरदेव कौर के जीवन के अंधियारे का ख़ात्मा हो गया था। स्वर्ण सिंह ने छहों भाईयों सहित उस मुहल्ले के चौराहे पर आ कदम रखा। आँखों के समक्ष आँखों के नूर को साक्षात् देख गुरदेव कौर की ऊपरी साँस ऊपर और निचली साँस नीचे रह गई।

नए सपने बुनती गुरदेव कौर बच्चों के गिर्द चकरी की तरह घूमती रहती और स्वर्ण सिंह उसके गिर्द लट्टू बन घूमता रहता। धूप-माटी में माटी बनती गुरदेव कौर पर वह ठंडी छाह बना। खेती का काम ख़ुद संभाल कर गुरदेव कौर को कच्ची हवेली की पटरानी बना कर रखा। वक्त से साथ ज़िंदगी की गाड़ी फिर से पटरी पर आने लगी। तिस पर एक के बाद गुरदेव कौर के घर तीन बेटियों और तीन बेटों ने जन्म लिया। चार बेटों की माँ गुरदेव कौर नम आँखों से कहती –

'अपने ख़ून से सींचे चार कांधों पर सवार हो कर रब के घर जाऊँगी।' जो मोह चन्न से था, बावजूद इसके वैसा चाह कर भी बाकियों के साथ महसूस न करती। दूसरों के मुँह से निवाला निकाल कर चन्न के मुँह में डालने तक से गुरेज न करती। उस पर वारी वारी जाती परंतु स्वर्ण सिंह सभी को एक नज़र से देखता। ख़ुद शिक्षित था इसलिए बच्चों की पढ़ाई-लिखाई की उपेक्षा नहीं की।

सात वर्षीय चन्न का स्कूल में दाख़िला करवाया। पढ़ाई में अच्छा निकला। स्कूल उनके मुहल्ले से आठ-नौ किलोमीटर दूर शहर में था। पैदल आते-जाते बच्चे के घर पहुँचने तक माता-पिता दोनों की जान पर

बनी रहती। बरसात आती तो मुहल्ले से शहर तक का कच्चा रास्ता दलदल का रूप ले लेता। जी कड़ा करके दो एकड़ खेत बेच कर शहर में एक बीघा ज़मीन खरीद कर हवेली बना ली।

वक्त पर वीरपाल के हाथ पीले कर ससुराल विदा कर दिया। गोद में बेटी उठाए माँ का छठी जचगी करवाने आई वीरपाल से गुरदेव कौर आँखें न मिला पा रही थीं। सातवीं बार कोख हरी हुई तो चन्न की मंगनी हो चुकी थी। उधर चन्न की बारात निकली और इधर गुरदेव कौर को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। डोली घर आने तक चन्न की छोटी बहन का आगमन हो चुका था। आठवें प्रसव तक वह पोते-पोती और चार नाती-नतिनी वाली हो चुकी थी। छोटू ने माँ के साथ-साथ भाभी का भी स्तनपान किया। सास को संग ले अपनी नसबंदी करवाने गई चन्न की पत्नी ने सास की भी नसबंदी करवा दी।

उधर से उजड़ कर इधर आकर जड़ें फूलने-फलने लगीं। दसवीं पास करते ही चन्न के लिए सरकारी द्वार खुल गए और वह पटवारी लग गया। खेतों की संख्या बढ़ने लगी। मवेशियों के लिए बाड़ा बनाया गया। आँगन में फल लगते, फूल महकते। घनी छाया में झूले की हिलोर का आनंद लेते बच्चों की किलकारियां रूह को सकून देतीं। स्वर्ण सिंह की हवेली मानो मेला बन गई।

शहर के केंद्र में बनी स्वर्ण सिंह की हवेली के तीन तरफ सड़क थी। बाज़ार बढ़ते-बढ़ते हवेली से आ लगा। शहरी रंग में ढलते स्वर्ण सिंह ने भी वहाँ मार्केट बना डाला। स्वर्ण सिंह मुहल्ले में ही नहीं शहर के आस-पास भी सरदार स्वर्ण सिंह के तौर पर जाना जाने लगा। स्वर्ण सिंह सरदार हुआ तो गुरदेव कौर सरदारनी हो गई। चीज़ें रख-रख भूलती। एक उतारती, एक पहनती, बन-ठन कर रहती। बेटे-बेटियां भी अपनी-अपनी जगह दूधो नहाओ, पूतो फलो को चरितार्थ करते हुए गृहस्थ हो गए।

बड़े कुटुंब वाली वीरपाल को साँस लेने की भी फुर्सत न मिलती परंतु माँ और चन्न से उसके मोह में कमी नहीं आई। छुटपन में माँ द्वारा पेड़ के नीचे छोड़ आने वाली घटना भले ही भूल गई थी, परंतु एकांत से हमेशा उस डर लगता। सोई हुई घबरा कर उठ जाती। माँ को तलाशने लगती। घड़ी भर माँ न दिखे तो घर सर पर उठा लेती। घर-गृहस्थी वाली होने पर दस-पंद्रह दिनों में मायके फेरा डाल जाती। माँ की रत्ती भर अनदेखी उससे सहन न होती और भाई-भाभियों से लड़ पड़ती।

इन्सान घड़ी भर में तोला तो घड़ी भर में माशा। दंत कथाओं की भाँति सुनी-सुनाई एक बार चन्न की पत्नी ने वीरपाल के मुँह पर सुना दिया-

'अच्छा ख़ासा पीछा छुड़ा छोड़ आई थी माँ। बड़ी चौधराइन नरैणो उठा लाई इसे... हमारा लहू पीने के लिए। फिजूल का सरदर्द। हर दूसरे दिन मुँह उठाए आ जाती है।'

सुन कर चन्न को ऐसा गुस्सा आया, आँगन में रखा घोटना उठाया और पत्नी की धुनाई कर दी। सारा परिवार छुड़ाने में लगा परंतु वह किसी के काबू न आए। मायके की ख़ैरियत माँगती वीरपाल अपने घर लौट गई। चन्न की पत्नी ने ऐसा बखेड़ा खड़ा किया कि बात बंटवारे तक आ पहुँची।

स्वर्ण सिंह ने समझदारी से काम लिया। जितने बेटे उतने चूल्हे। उस हवेली के पाँच हिस्से कर दिए। चार बराबर हिस्से चार बेटों के और पाँचवां हिस्सा गुरदेव कौर के नाम करके चालू बरस की फसल का

मुनाफा बेटियों में बाँट दिया। दो दुकानें बेटियों के नाम कर दीं। गुरदेव कौर का हिस्सा जब तक वे दोनों ज़िंदा हैं दोनों का। उनकी मृत्यु के बाद दोनों में से बाद में रहने वाले की जिस घर में देख-भाल की जाएगी उस का होगा। मृत्यु के बाद की रस्मों का सारा खर्च उस हिस्से में से किया जाएगा। बड़ी हवेली में वृक्षों की जगह दीवारों ने हथिया ली थी।

अपने-अपने घरों में सभी आनंद से रह रहे थे। चन्न और वीरपाल अपने बच्चों को ब्याह कर दादा-दादी और नाना-नानी बन गए थे। पौत्र-वधु से गुरदेव कौर बहुत स्नेह करती थीं। वह भी दादी सास का सास से भी ज़्यादा आदर-सत्कार करती। चन्न की बीवी बहू पर लाख निगाह रखती परंतु फिर वह सास की नज़र बचा कर गुरदेव कौर के पास जा बैठती। पौत्र-वधु ने जब पुत्र को जन्म दिया तो गुरदेव कौर के पाँव ज़मीं पर न पड़ते। मूल से ब्याज प्यारा होता है और जब चक्रवर्ती ब्याज उस की तरफ बाहें फैला कर गोद में चढ़ने की ज़िद करता तो वह वारी-वारी जाती। आने-बहाने चक्कर लगा कर वह चन्न की दहलीज़ लांघ जाती। जहाँ समय पर ज़मीन-जायदाद की बंटवारा कर स्वर्ण सिंह ने पुत्रों में से लड़ाई की जड़ उखाड़ फेंकी थी, वहाँ हवेली में उठती दीवारों ने गुरदेव कौर को दु:खी कर दिया। उसे पीछे छूटी पिपली याद आती। फिल्म की भाँति चलती ज़िंदगी की रील उसे भीतर ही भीतर मथती रहती।

हवेलियों की
बनी महारानी बीबी
खड़े चौबारे
रंग करतार के
छाई हरियावल
और बंबियो से छर्राटे
पूरबी हवाएं चले
पंछी फिर क्योंकर उदास रे ?

काम करता स्वर्ण सिंह उड़ता फिरता। मजबूत तन। जीवन भर कभी पेट दर्द का चूरण तक न खाया। धीमी-धीमी उठती पीड़ा पसली में शूल सी बन बैठी, चंद दिनों में ही बिस्तर से लग गया। कैंसर किस शै को कहते हैं, वह क्या जाने भला। अंतिम स्टेज बता डॉक्टरों ने सेवा करने की सलाह दे घर भेज दिया। संक्राति का दिन। रात का अंतिम पहर। गुरुद्वारे के माइक से अमृत काल का वाक्य कानों में पड़ा। स्वर्ण सिंह ने अंतिम हिचकी ली। बेटों ने चारपाई से उतार दीया बाती की कि पंछी उडारी मार गया।

पति का बिछोड़ा गुरदेव कौर के लिए असह्य हो गया। बुत बनी एक टक स्वर्ण सिंह के मृतक शरीर को तकती जाए। आँखों से एक आँसू तक न गिरा। वीरपाल का रुदन पत्थर दिलों को भी दहलाता

एक बार आँखें खोल वे मेरे बाबला
अम्मड़ी के सामने छाया अंधेर वे जग के नूर
हमारा हुआ मंदा हाल वे जिंद के रखवाले

हमें भी ले चल साथ वे रूह के राजा।

चन्न ने माँ को आलिंगन में ले चीत्कार किया और गुरदेव कौर भी बिलख पड़ी। छाती पीट-पीट कर विलाप किए जाए। उसे संभालना मुश्किल हो गया। गश पर गश आती जाए।

अंतिम दर्शनों के लिए स्वर्ण सिंह का मृतक शरीर शोक-स्थल पर रखा गया। गुरदेव कौर पति के शव के साथ लिपट गई। जैसे-तैसे उसे अलग किया गया। चारों पुत्रों ने पिता की अर्थी को काँधा दिया। शवयात्रा ने दहलीज लाँघी और गुरदेव कौर को पक्षाघात का दौरा पड़ गया। एक बुजुर्ग ने चावल के दानों जितनी अफीम अपनी जेब से निकाल कर उसकी जुबान के नीचे रखी, परंतु कोई फ़ायदा न हुआ।

अंतिम भोग की रस्म तक मातमपुर्सी के लिए लोग आते रहे। गुरदेव कौर को होश न थी। परमात्मा की इच्छा मान सब्र करने का हौसला देते सगे-संबंधी अपने-अपने घरों को लौट गए। जितने दिन वीरपाल रही माँ को एक मिनट के लिए अलग न छोड़ा। घर-गृहस्थी वाली थी सो रोती-बिलखती वह भी अपने घर लौट गई।

'मरने वालों के साथ मरा तो नहीं जाता माँ, संभलो ज़रा।'

चन्न दूध में भिगो-भिगो कर निवाला माँ के मुँह में डालता। वह चौथाई भर रोटी खा लेती। संग-संग उसे शौच की हाजत होने लगती और कपड़े ख़राब हो जाते। चन्न की घरवाली पर मुसीबत टूट पड़ती। वह नल से पाइप लगा कर दूर से गुरदेव कौर पर पानी की बौछार करती पूरा घर सर पर उठा लेती।

'जब एक दूसरे का विछोह नहीं सहा जाता था तो बुढ़िया को भी साथ ले मरता न। खुद तो मर गया स्यापा हमारे सिर छोड़ गया। ब्लड प्रेशर मुझे है, सूगर मुझे है। और छत्तीस रोग हैं। मुझसे नहीं संभाली जाती। न बाकी के किसी दूसरी कोख से पैदा हुए हैं? गंदगी में हाथ मारने का सारा ठेका चन्न का परिवार क्यों ले? बाकियों ने क्या जायदाद से हिस्से नहीं लिए?'

चन्न ने घरवाली की बहुत मिन्नतें की, 'माँ मुझे बर्छियों के साये से बचा कर लाई थी। अब जब हमारी बारी आई है ममता का कर्ज़ उतारने की, ऐसा मत करो, तुम्हें रब का वास्ता है। माँ की साफ़-सफाई के लिए मैं मेड रखवा देता हूँ।'

'ठीक है डैडी। मैं भी देख लूंगी बीजी को। बड़ों की सेवा...।' उसकी पुत्रवधु ने दादी सास की सेवा-संभाल का जिम्मा लेने की हामी भरी।

'छोटा सा बच्चा है तेरी गोद में। दूसरा भले ही कल जन ले, आई बड़ी बड़ों की सेवा करने वाली।' जुम्मा-जुम्मा चार दिन हुए हैं पैदा हुए और मुझसे आगे होकर चलेगी? तुम्हें क्या पता इस परिवार का। तुम हटो एक तरफ, आज मुझे दो-दो हाथ कर ही लेने दो।' वह गली की तरफ बढ़ चली।

'चुप होती हो या दूं तुम्हारी गर्दन पर एक....।' चन्न ने पत्नी को डाँट लगाई, पर वह कहाँ रुकने वाली थी।

'तुम्हारी सारी मर्दानगी मुझ पर ही चलती है। तब मुँह में दही जमा रखी थी...अपने हाथों पाला छोटा भाई तुम्हारा शरण। अभी तक मेरे नाखूनों में उसका गू... और वह साझी ज़मीन के खाते में लिया ट्रैक्टर बेच

कर चुप रहा। कंपेन और ट्राली कहाँ गई, उसने पता तक नहीं चलने दिया। न वह क्या तुम्हारे माँ-बाबू जी की इच्छा के बिना शरणी के परिवार के पेट में उतर गया सब ? उनके कोई अलग पेट है क्या... ? मुझे भूल गया क्या खेत बेचा बापू ने और पैसा हड़प लिया देबी ने। आए मैदान में कौन आता है, आज निपटारा हो ही जाए।' उसने छाती ठोकी और देवरानियां भी मुकाबले में आ डटी।

'बात तो तुम्हारी ठीक है दीदी परंतु सोच लो। हिसाब मांगा तो तुम्हें सबकी भरपाई करनी मुश्किल हो जाएगी। माँ जी ने छुपा-छुपा कर जो तुम्हारी जेबें भरी हैं, किसी छुपा है क्या। दस-दस तोले के रानीहार तुमने गटक लिए। चाँदी की गगरियां, शिकंजी सेट...।' 'देखो भाई तुम दोनों बहुत सयानी हो। पतियों को पल्लू से बाँध कर नचा-नचा कर घर भर लिए। मारे तो गए हम मूर्ख। बेवकूफ था मेरा पति जो बड़े के चरण धोता और छोटे को गोद में लिए फिरता रहा ताउम्र। भला मानस उस वक्त चुप रहा, जब ज़मीन-जायदाद का बंटवारा हुआ था। सड़क किनारे नहर के साथ लगती ज़मीन बड़े भाई ने संभाल ली। सामने की दुकानें छोटे ने कब्जा लीं। बीच में रहा गया मेरा देबू। अब मैं करूंगी सारा हिसाब। देखती हूँ कैसे होता है हमारे साथ भेद-भाव।'

देवरानी-जेठानी को अगला-पिछला खंगालते सुन हरदेव की पत्नी भी मैदान में कूद पड़ी। वह भला क्यों पीछे रहती। औरतों का सुलगता अखाड़ा देख चारों भाई इकट्ठे बैठे। बीती ताही बिसार दे, अब आगे संभालने का फैसला ले कर उन्होंने औरतों का मुँह बंद कर दिया। सवाल उठा - 'माँ कौन संभाले ?'

चन्न से छोटा हरदेव यह कह कर चलता बना कि 'बच्चों की छुट्टियां होने वाली हैं। होस्टल से साल भर में एक बार ही तो घर आते हैं वे। वह खुद काम के चक्कर में इधर-उधर रहता है। पत्नी बच्चों को देखेगी कि माँ को ?'

सब से छोटे शरणजीत ने पत्नी के मानसिक रोगी होने का कह कर पल्ला झाड़ लिया, 'आप लोगों को मेरी हालत पता तो है। मेरे वाली से तो हमारा ही खाना नहीं बनता। लकवे की मारी माँ को क्या संवारेगी ?'

'आदमी हो ढंग का तो मौक़ा ले संभाल। बोलो, अब क्यों नहीं बोलते ? मुँह में दही जमा रखी है क्या ? वे लोग मलाइयां चाट, अब बीमारी की मारी बुढ़िया को संभालने से किनारा कर गए। मैं नहीं संभाल सकती फालतू का स्यापा...। संभाली जाती है तो संभालो, वर्ना मैं खुद कल को मायके चली।' चन्न के सर पर स्वार उसकी घरवाली फुंकारती हुई, पाँव पटकते हुए भीतर चली गई।

समस्या बनी गुरदेव कौर को कोई भी अपने साथ रखने को तैयार न था। एक-दूसरे की समस्या को समझते हुए सभी भाइयों द्वारा मिल कर लिए फैसले के अनुसार माँ की चारपाई बारी-बारी से महीने-महीने भर के लिए सभी बेटों के घर का चक्कर लगाने लगी।

गुरदेव कौर को चन्न से छोटे बेटे के घर आए दूसरा दिन ही हुआ था। बच्चों को होस्टल से छुट्टियां हो गई थीं और वे घर आए हुए थे। छोटा पोता फ्रूटी लाया और चाचा के बच्चों के साथ मिल कर दादी के मुँह को लगा दी। गट-गट करके वह पूरी फ्रूटी पी गई। बच्चों की तरफ देख उसकी वांछे खिल गई। आँखें चमक

उठीं। बच्चों ने दादी के गिर्द घेरा डाल लिया और उसकी चारपाई पर बैठ कर होस्टल की बातें सुनाने लगे। जैसे ही बहू की नज़र बच्चों पर पड़ी उसे ताप चढ़ गया।

'इधर लाओ, पिलाऊं इसे फ्रूटियां। हग-हग कर बिस्तर भर देगी। धोएगा कौन ? तुम लोगों का बाप ? चलो चाची के घर। चारपाई पर चढ़ बैठे हो। इन्फेक्शन हो गया तो और मुसीबत में डालोगे।'

'लाडी वीरे, दादी के मरने के बाद हम यह चारपाई संभाल कर रखेंगे। जब हमारी मम्मियां बूढ़ी होंगी चारपाई खरीदनी नहीं पडेगी।' बच्चे हँसे।

बहू ने बच्चों को बाँहों से घसीटा और देवर के घर धकेल आई।

गुरदेव कौर ने खाना-पीना छोड़ दिया। हर वक्त मुँह से लार बहने लगी। हिड्डयों की गठरी बनी चमड़ी उधड़ने लगी और दिनों में ही सूख कर तीला हो गई।

पिता को गुज़रे साल भर होने को आया था। वीरपाल के दिल को चैन कहाँ। हर वक्त ध्यान माँ में रहता। खुद बीमार रहने लगी तो बच्चों ने ज़िद करके घर में बंद कर लिया। न रहा गया तो छोटे बेटे की मिन्नतें कर साथ लिया और सिर्फ़ आने-जाने की बात कह मायके ले आई।

मायके की गली का मोड़ मुड़ते ही वीरपाल का हलक सूख गया। गुरदेव कौर की चारपाई एक बेटे के घर से दूसरे के घर का रास्ता तय कर रही थी। बेटी थी, माँ का दुःख कैसे सहती। चारपाई वहीं रखवा कर जी भर कर मन का गुब्बार निकाल मारा।

'डूब मरो चुल्लु भर पानी में। चार बेटों के होते हुए माँ की चारपाई गली-द्वारों का चक्कर लगा रही है।' ऊँची आवाज़ें सुन कर गली-मुहल्ला इकट्ठा होने लगा। भाई-भाभी भी बाहर निकल आए।

'चुप करो जीजी। बहुत सह लिया सारी उम्र तुम्हारा नखरा। इतना ही माँ का मोह हिलोरे मारता है तो ले जाओ और संभालो माँ को।' छोटी भाभी बोली।

'बस यही सुनना बाकी रह गया था। अगर तुम लोगों को लाज नहीं आती तो मुझे काहे की शरम। ठीक है माँ मेरे साथ ही जाएगी, परंतु कसम है तुम लोगों को, अगर इसका मरी का मुँह देखने आया कोई मेरे दर पर।' गुस्से में बोलते हुए सिरहाने की तरफ से चारपाई को हाथ में ले लिया।

'चल नहीं आते मरने पर, पर बताओ माँ के नाम के पाँचवे हिस्से का क्या करना है ? बापू की वसीयत के मुताबिक जिसके दर पर माँ आख़िरी साँस लेगी उसे ही सारा हिस्सा मिलेगा।' चन्न ने घरवाली से आगे होकर वीरपाल के हाथ से चारपाई छुड़वा कर वहीं रखवा ली। गुरदेव कौर ने कमज़ोर बाँहें फैलाई और होंठ फड़फड़ाए।

वीरपाल ने माँ का माथा सहलाया और सीना ताने खड़े चन्न की तरफ तीखी निगाहों से देखते हुए पिंजर बनी माँ को उठा कर काँधे से लगा लिया।

लेखिका
दिप्ति बबूटा
नीलम शर्मा 'अंशु' द्वारा अनुवादित



सेवानिवृत्ति



अप्रैल से सितंबर 2023 के दौरान निम्नलिखित अधिकारी एवं कर्मचारी निगम से सेवानिवृत्त हुए, सीसीआई परिवार की ओर से उनके सुखद भावी जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

	अप्रैल 2023	
1.	श्री टी कामथ, उप प्रबंधक, कोयंबतूर	30.04.2023
2.	श्री जे. डी. सोलंकी, वरि.वाणिज्यिक अधिकारी, आदिलाबाद	30.04.2023
3.	श्री सुधीर एम. यादव, अनुभाग अधिकारी, कलंबोली	30.04.2023
	मई 2023	
4.	श्री पांडुरंग भोसले, एम.टी.एस, मुख्यालय	31.05.2023
5.	श्रीमती हिना कोटड़िया, अनुभाग अधिकारी, राजकोट	31.05.2023
6.	श्रीमती रंजना बांदिवडेकर, व्यक्तिगत सचिव, मुख्यालय	31.05.2023
	जून 2023	
7.	श्री के. वेंकटास्वामी, उप प्रबंधक, वारंगल	30.06.2023
8.	श्री आर. ईरन्ना, सहायक प्रबंधक, गुंटूर	30.06.2023
9.	श्री महेंद्र सिंह पवार, सहायक प्रबंधक, श्रीगंगानगर	30.06.2023
	अगस्त 2023	
10.	श्री प्रवीण कुमार गुप्ता, सहायक प्रबंधक, सिरसा	31.08.2023
11.	श्री वी वेंकटेश्वर राजू, अनुभाग अधिकारी, वारंगल	31.08.2023
	सितंबर 2023	
12.	श्री सुनील मोहनोट, एमटीएस, श्रीगंगानगर	30.09.2023
13.	श्रीमती आर. विशालाक्षी, अनुभाग अधिकारी, वारंगल	30.09.2023
14.	श्री मोहम्मद फैयाज आलम अंसारी, सहायक प्रबंधक, अकोला	30.09.2023
15.	श्री चंद्र सिंह कोरंगा, वाहनचालक, मुख्यालय	30.09.2023

।। श्रध्दांजलि ।।



स्व. संजय कुमार,

महा प्रबंधक, कोलकाता

दिनांक : 21.05.2023



स्व. दीपक कदम

एमटीएस मुख्यालय

दिनांकः 24.08.2023

निगम की ओर से स्व. संजय कुमार, महा प्रबंधक तथा स्व. दीपक कदम, एमटीएस को विन्रम श्रद्धांजलि।

राष्ट्रीय एकता तथा विश्व बंधुत्व का संदेश वाहक

राष्ट्रीय एकता के संदेशवाहक के रूप में भी बृहद विश्व सूक्ति कोष का अपना विशिष्ट महत्व है इसमें विशाल भारतवर्ष की संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं तथा हिंदी, उर्दू, कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, असमिया, मणिपुरी, तामिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम सदृश आधुनिक भाषाओं में युग-युग के लोग नेताओं व साहित्यकारों द्वारा किस प्रकार एक ही संस्कृति तथा एक से विचारों की अभिव्यक्ति हुई है, यह अनुभूति पाठक को सहज ही होगी । राष्ट्रीयता का स्वर विश्व बंधुत्व का पुरस्कारकर्ता रहे, यह दृष्टि भी इस ग्रंथ में रही है, जैसे राष्ट्रीय स्तर पर उसमें संप्रदाय निरपेक्ष, वर्ग निरपेक्ष, प्रांत निरपेक्ष, भाषा निरपेक्ष दृष्टि रही है, वैसे ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसमें किसी प्रकार पक्षपात या भेदभाव नहीं रखा गया है, यही नहीं, देश-देश के मनीषियों, संतो आदि द्वारा एक ही विषय पर विचार - साम्य है, भाव - साम्य हैं ।

नारी

तुम कितनी निश्छल हो,
शैल - प्रकृति - सी निर्मल
सहज हृदय-गुण ही
नारी - शोभा का संबल ।

- सुमित्रानंदन पंत (पतझर)

अबला - जीवन, हाय ! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी !

- मैथिलीशरण गुप्त (यशोधरा, पृ. ४७)

... हीन नहीं नारी कभी,
भूत-दया- मूर्ति वह, मन से शरीर से ।

- मैथिलीशरण गुप्त (यशोधरा, पृ. १४५)

तन में, मन में, रोम-रोम में, नख से शिख पर्यन्त,
लिखकर तू रह गई स्नेहमयि ! अपना स्नेह अनन्त ।

- सियारामशरण गुप्त (स्मृति)

है धिक्कार योग्य नारी का
हास्य कटाक्ष वचन यह यौवन
बनता है जिसके प्रभाव से
पुरुष पतित आपकीर्ति - निकेतन ।

- रामनरेश त्रिपाठी (स्वप्न, 3140)

नारी केवल नर को रिझाने अथवा उसे प्रेरणा देने की नहीं बनी है। जीवन-यज्ञ में उसका भी अपना हिस्सा है और वह हिस्सा घर तक ही सीमित नहीं, बाहर भी है। जिसे भी पुरुष अपना क्षेत्र मानता है, वह नारी का भी कर्मक्षेत्र है ।

- रामधारीसिंह "दिनकर"
(वेणु वन, निबन्ध "अर्धनारीश्वर")

समाज ने स्त्रीमर्यादा का जो मूल्य निश्चित कर दिया है केवल वही उसकी गुरुता का मापदण्ड नहीं। स्त्री की आत्मा में उसकी मर्यादा की जो सीमा अंकित रहती है, वह समाज के मूल्य से बहुत अधिक गुरु और निश्चित है, इसी से संसार भर का समर्थन पाकर जीवन का सौदा करने वाली नारी के हृदय में भी सतीत्व जीवित रह सकता है और समाज भर के निषेध से घिर कर धर्म का व्यवसाय करने वाली सती की सांसें भी तिल-तिल करके असती के निर्माण में लगी रह सकती हैं।

- महादेवी वर्मा (अतीत के चलचित्र, पृ. ४७)

विवाह उसके अबोधपन में ही हो गया और वैधव्य भी अनजा ने आ पड़ा। न पहली स्थिति ने उसे उल्लास में बहाया था, न दूसरी स्थिति उसे निराशा में डूबा पायी ।

- महादेवी वर्मा (अतीत के चलचित्र, पृ. ५१)



रामधारी सिंह दिनकर

जन्म : 23 सितंबर, 1908 निधन : 24 अप्रैल, 1974

भा.क.नि.

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
कपास भवन, प्लॉट नं. 3 A सेक्टर 10,
सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई - 400 614, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : 022-27579217 फैक्स : 022-27576030

सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली - 110 011
www.ministryoftextiles.gov.in

"राजभाषा रश्मि" छमाही पत्रिका का प्रकाशन ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, नवी मुंबई - 400 614